संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित
मूल्य : रु. ६/-
अंक : १८९
सितम्बर २००८

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

बिहार के बाढ़ग्रस्त इलाकों में औषधियाँ, बर्तन, कपड़े और आवश्यक सामग्री बाँटने के लिए २ करोड़ रुपये से भी अधिक राशि सेवाकार्यों में पहुँचाने की पूज्य बापूजी ने आज्ञा दी है और समितियाँ राहत सेवाकार्यों में जुट गयी हैं। भोजन और फूड पैकेट बँटना शुरू हो गया है।

विश्वास किसका करें ?

झूठे, विश्वासघातकी, संस्कृति के भक्षक एवं बिकाऊ कुप्रचारकों का

या

सदा वंदनीय एवं लोकहित में कार्यरत संतों-महापुरुषों तथा करोड़ों भक्तों के स्व-अनुभव का ?

कुप्रचार की पराकाष्ठा हुई फिर भी सूरत (गुज.) में जन्माष्टमी महोत्सव पर पूज्य बापूजी के दर्शन हेतु उमड़ा जनसैलाब मंडप में न समाया

परम्परा जारी है...

यह तो आदिकाल से चला आ रहा है कि इस धराधाम पर जब भी कोई संत-भगवंत अवतरित होते हैं तो उनके प्रति हमारी श्रद्धा डिगानेवाले लोग भी पैदा होते हैं। ऐसे लोगों ने संतों को बदनाम करने के लिए हर प्रकार की साजिशें की हैं।

संत निवृत्तिनाथजी, संत ज्ञानेश्वर, संत सोपानदेव, संत मुक्ताबाई, संत तुकारामजी, सिंध देश के संत साँईं कँवररामजी, गुरु नानकदेवजी, सुकरात, स्वामी विवेकानंदजी, स्वामी रामतीर्थ, साँई बाबा, गणेशपुरी के स्वामी मुक्तानंदजी एवं पूजनीय महापुरुष स्वामी नित्यानंदजी को भी नहीं छोड़ा, उनके लिए भी जहर उगलते रहे। किसीके लिए कुछ, किसीके लिए कुछ; जितने अधिक प्रसिद्ध उतनी जहर उगलनेवालों की साजिश भी अधिक... भारत के संतों को भारत में नीचा दिखाने की साजिश भी अधिक... लेकिन समझदार सज्जन तो लगे रहे महापुरुषों के साथ ! नामदेवजी महाराज के हाथों में हथकड़ी व पैरों में जंजीर डाली गयी। सतानेवालों ने क्या बाकी रखा ? साँईं टेऊँरामजी और साँईं शांतिप्रकाशजी के लिए तथा अन्य भी कई हिन्दू संतों के लिए कुप्रचार करने-करवानेवालों ने कोई कमी नहीं छोड़ी। रामकृष्ण परमहंसजी और विवेकानंदजी के लिए सुन न सकें, बोल न सकें ऐसा कुप्रचार हुआ। नानकदेवजी और कबीरजी पर कितना कुप्रचार का कहर बरसाया गया ! भगवान महावीरजी को भी कितना सताया गया !

जैसे वृक्ष अपने फलों को स्वयं कभी नहीं खाता, सरिता अपने जल का स्वयं पान कभी नहीं करती वैसे ही संतों का जीवन भी अपने लिए नहीं होता। स्वार्थी और ईर्ष्या से भरे लोग उनकी यश-कीर्ति को धूमिल करने के बहुतेरे प्रयास करते हैं किंतु इन सबकी परवाह न करते हुए वे संतजन अपने जीवन को परहित में ही व्यतीत कर देते हैं। जिनके जीवन का एकमात्र ध्येय है **'सर्वेभवन्तु सुखिनः'**, उनका जीवन तो बस, मानवमात्र के कल्याण में तथा समाज को दुःखों से छुटकारा दिलवाकर उनके भीतर शांति एवं आनंद भरने में ही व्यतीत होता है।

आज भी कुछ संकुचित मति के षड्यंत्रकारी अपनी निजी स्वार्थसिद्धि के लिए एक के बाद एक हिन्दू संतों को बदनाम करने की साजिश रच रहे हैं। ...सुपारी दी ६ आदमियों के लिए १.५ लाख रुपये में, उसमें भी ५ हजार डिपोजिट और खर्च कम हो, यह भी दिखा रहे हैं। ऐसी कालिमा दिखाकर काले औघड़ ने अपनी कालिमा प्रकट कर दी। अगर मंत्र से कोई मर सकता है तो श्रीकृष्ण के जमाने में क्या कोई मांत्रिक नहीं था जो दुर्योधन को यम-सदन में पहुँचा देता ? कैसे शर्मजनक आरोप हैं ! कितने झूठे, वाहियात, बोगस, असंगत आरोप हैं ! इससे हानि संतों को नहीं बल्कि समाज और संस्कृति को ही है। अतः सावधान रहें, कंधे-से-कंधा मिलाकर इस कुप्रचार को सुप्रचार में बदलें।

ऋषि प्रसाद
मासिक पत्रिका

वर्ष : १९ अंक : १८९
सितम्बर २००८ मूल्य : रु. ६-००
भाद्रपद-आश्विन वि.सं.२०६५

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत, नेपाल और भूटान में

(१) वार्षिक : रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक : रु.२२५/-
(४) आजीवन : रु. ५००/-

पाकिस्तान एवं बांग्लादेश में

(१) वार्षिक : रु. ८०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १५०/-
(३) पंचवार्षिक : रु. ३००/-
(४) आजीवन : रु. ७५०/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ 20
(२) द्विवार्षिक : US $ 40
(३) पंचवार्षिक : US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत, नेपाल व भूटान में	७०	१३५	३२५
पाकिस्तान, बांग्लादेश में	९०	१७५	४००
अन्य देशों में	US$20	US$40	US$80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अतः अपनी राशि मनीऑर्डर या ड्राफ्ट द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

संपर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-५.
ऋषि प्रसाद से संबंधित कार्य के लिए फोन नं. : (०७९) ३९८७७७१४, ६६११५७१४.
अन्य जानकारी हेतु : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८, ६६११५५००.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, मोटेरा, जिला गांधीनगर, पीओ. साबरमती-३८०००५. गुजरात
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रीज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद - ३८०००९. गुजरात
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

Subject to Ahmedabad Jurisdiction

अनुक्रमणिका

(१) विचार मंथन — २
✲ संतों के साथ ऐसा क्यों ?
(२) साधना प्रकाश — ५
✲ स्वाधीनता का सदुपयोग
(३) संस्कारों के लिए सरकारी कोष का सदुपयोग — ६
(४) मधु संचय — ७
✲ संत परहित के लिए विपत्ति सहते हैं
(५) ज्ञान गंगोत्री — ९
✲ प्रतीक्षा नहीं समीक्षा
(६) राष्ट्र जागृति — १२
✲ षड्यंत्र ही है !
(७) विवेक जागृति — १४
✲ संत का अपमान करनेवालों का ही अपमान होता है
✲ मीडिया शर्मनाक और विनाशकारी प्रचार कर रहा है...
(८) संत महिमा — १५
✲ परमारथ के कारने, साधु धरा शरीर
(९) कथा प्रसंग — १८
✲ महाकवि गंग की ईश्वरनिष्ठा
(१०) सत्संग सुमन — १९
✲ पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं
(११) संत वाणी — २०
✲ सद्गुरु जैसा परम हितैषी कोई नहीं संसार में
(१२) सुखमय जीवन के सोपान — २१
✲ सर्वोपरि व परम हितकर...
(१३) सांस्कृतिक चेतना — २२
✲ देशवासियों के नाम मालवीयजी का संदेश
(१४) व्यक्तित्व और व्यवहार — २३
(१५) जीवन पथदर्शन — २४
✲ जीवनशक्ति का विकास
(१६) प्रेरक प्रसंग — २५
✲ 'अभी दिल्ली दूर है'
(१७) ...और अब 'अघोर लीला' — २६
(१८) रामसेतु की पूजा करने समुद्र में कौन जाता है ? — २८
(१९) वे कहते हैं... — २९
✲ ...ताकि आप जागृत हों
(२०) शरीर-स्वास्थ्य — ३०
✲ त्रिदोष-सिद्धांत
(२१) कृपया भक्तों के हृदय को ठेस पहुँचाने का कार्य न करें — ३१
(२२) संस्था समाचार — ३२

संतों के साथ ऐसा क्यों ?

विभिन्न संतों ने संत आसारामजी बापू के बारे में किये जा रहे कुप्रचार की कड़े शब्दों में भर्त्सना की और बापूजी के प्रति अपना दृढ़ विश्वास व्यक्त किया :

१. जगद्गुरु शंकराचार्य पूज्य श्री माधवाश्रमजी महाराज :

पूज्य संत श्री आसारामजी पर अभियोग लगाकर उनको प्रताड़ित किया जा रहा है। यह प्रत्येक भारतीय के लिए हानिकारक है। लोगों को इसके लिए कमर कसकर तैयार रहना चाहिए और संस्कृति की रक्षा में जुट जाना चाहिए। गुरुकुल का अच्छी तरह प्रचार-प्रसार होना चाहिए। इसका प्रचार अगर नहीं होता है तो हमारे देश का हित होना बहुत कठिन है। जो हमारी सभ्यता के साथ छेड़छाड़ कर रहे हैं उन्हें हम सावधान करते हैं।

२. बालयोगी अर्जुनपुरीजी महाराज, तुलसी मानस मंदिर हरिद्वार के संस्थापक एवं जूना अखाड़ा के वरिष्ठ महामंडलेश्वर :

यह आज से नहीं चल रहा है। हमारे पूज्य संत श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी महाराज साधना में बैठे थे, उन्हें अकारण जेल में डाल दिया गया। केस चला, फिर उन्हें मुक्त कर दिया गया। अभी कुछ दिन पहले अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर योग का प्रचार करनेवाले रामदेवजी के पीछे लोग पड़े। संत श्री आसारामजी ने जो अध्यात्म का प्रचार-प्रसार किया है वह तो बेमिसाल और स्तुत्य है, जितनी सराहना करो कम है। साथ ही बापूजी ने जो पिछड़े क्षेत्रों में जाकर उत्थान का कार्य किया है, गुरुकुल चलाये हैं ये सब प्रयास प्रशंसनीय हैं। अफवाहों में उन्हें फँसाकर बदनाम किया जा रहा है। किसी भी प्रकरण में बापूजी दोषी नहीं हैं।

३. महामंडलेश्वर पूज्य हरिचेतानंदजी महाराज :

इस देश के अंदर बहुत बड़ा षड्यंत्र चल रहा है। बापूजी पर लगाये गये आरोप झूठे हैं, निराधार हैं। गुरुकुल समाप्त करेंगे तो इस देश में संस्कारहीन लोग रहेंगे। वे संस्कारहीन लोग देश, समाज, धर्म की क्या रक्षा करेंगे ? जिस महापुरुष ने सनातन धर्म के लिए अपना जीवन लगा दिया, जो संत गाँव-गाँव, शहर-शहर घूमकर संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं, गरीबों का उत्थान कर रहे हैं, उन पर आरोप लगाना सरासर गलत है। जिन्होंने लाखों बच्चों को संस्कारित करने का संकल्प लिया है वे जागृत अवस्था की तो बात छोड़ो, स्वप्न में भी किसीका बुरा कर नहीं सकते, सोच नहीं सकते। अतः सभी आतताइयों का हम डटकर मुकाबला करें।

४. महामंडलेश्वर पूज्य श्री आनंद चेतन सरस्वती :

आज यह देखा जा रहा है कि कुछ ऐसे तत्त्व हैं जो हमारी संस्कृति और संस्कार के विरुद्ध हैं। वे हमारे देश के केन्द्रबिन्दु को नष्ट करना चाहते हैं। संत इसके स्रोत हैं, केन्द्रबिन्दु हैं। संतों को, उनके गुरुकुलों को इस प्रकार के लांछन लगाकर उन्हें बदनाम किया जाय ताकि वे अपने-आप ध्वस्त हो जायें। जगत में भले

ही लोग स्वार्थ के लिए जीते हैं लेकिन संत दूसरों के लिए जीता है । हमारे पूज्य संत पर जो आरोप लगा रहे हैं कि बालकों की हत्या की जा रही है, ये आरोप लगानेवाले कौन हैं जरा विचार करें । निःसंदेह आपको इस निष्कर्ष पर पहुँचना होगा कि ये भारतीय नहीं विदेशी तत्त्व हैं । उनकी नीति ऐसी है कि ऐसा षड्यंत्र रचें कि समाज के अंदर संतों के प्रति अनास्था पैदा हो, जिससे स्वयं ही संस्कृति ध्वस्त हो जायेगी । मैं आपको चेतावनी देना चाहता हूँ कि आप लोग सतर्क रहें, इनकी बातों में न आयें, यही आपके लिए उत्तम होगा ।

५. निर्वाणपीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर पूज्य विश्वदेवानंदजी महाराज :

हमारे संत ईश्वरीय चेतना के साथ हमें जोड़कर जो भोगवादी अहं है, उससे ऊपर उठाते हैं । आज पाश्चात्य जगत चाहे कितना भी आगे बढ़ गया हो लेकिन वह जानता है कि भारतीय अध्यात्म के सामने हम बहुत पिछड़े हैं और हमारी सोच बौनेपन की भावना से ग्रसित है । यही कारण है कि भारत की विभूति को नकारने की कोशिश की जा रही है और लांछित करने का आयोजन सुनियोजित षड्यंत्र के तहत बनाया जा रहा है । उसकी नयी-नयी विधाएँ खोजी जा रही हैं और उनका ही शिकार हैं आज के सम्माननीय संत, जो देश ही नहीं विदेश तक अपनी गरिमा का संदेश देने का सामर्थ्य रखते हैं । उनको कैसे लांछित किया जाय और इसीके साथ पश्चिमी संस्कृति और पश्चिमी धर्म को प्रस्थापित किया जाय यही षड्यंत्रकारियों की विचारधारा है ।

गुरु पर लोग आस्था रखते हैं, उनका विश्वास रहता है कि गुरु उन्हें ईश्वर तक ले जा सकते हैं । जब ऐसे व्यक्ति पर प्रहार करेंगे, लांछन लगायेंगे तो भारतीय समाज अपने-आपमें भटक जायेगा । यह भारत की अस्मिता के साथ खिलवाड़ का षड्यंत्र है । हमारे संत हमेशा ही सच्चे हैं ।

६. श्री श्री शिव प्रेमानंदजी महाराज, निर्वाणिक अखाड़े के महामंडलेश्वर, निजात्म-प्रेम धाम के प्रबंध व्यवस्थापक :

मैं भी छोटी अवस्था में गुरुकुल में आ गया था और मुझे अच्छे संस्कार मिले । अभी जो गुरुकुलों के बारे में अनर्गल प्रचार कर रहे हैं यह बिल्कुल गलत है । ये प्रयास लांछन लगाकर, शब्दों के प्रहार द्वारा अथवा अन्य साधनों द्वारा भारतीय संस्कृति को नष्ट करने के लिए चल रहे हैं ।

७. निरंजनी पंचायती अखाड़ा के सचिव श्री त्र्यंबक भारतीजी महाराज :

आज संत का अपमान हो रहा है । संत तो क्षमाशील हैं पर प्रजा के लिए यह एक अशोभनीय बात है । जो गुरुकुल चल रहे हैं, संस्कार-सिंचन का कार्य चल रहा है, यह परमार्थ का कार्य है । इसमें विघ्नरूप नहीं होना चाहिए ।

८. आनंदपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर पूज्य श्री देवानंदजी महाराज, श्री श्री भोलानंद संन्यासाश्रम, हरिद्वार :

जिन संत ने देश, समाज के उत्थान के लिए अपनेको समर्पित कर दिया है उनके पीछे पड़े हैं। साधु पर लांछन भारतमाता को, हमारी संस्कृति को ध्वस्त करने की चाल है । आज संत श्री आसारामजी बापू पर लांछन लगाया जा रहा है । बापूजी तो संस्कार देते हैं, वे बच्चों को क्यों मरवायेंगे ? यह तो सोची-समझी साजिश है । आज सनातन हिन्दू धर्म-समाज इकट्ठा होकर इसके विरुद्ध आवाज न उठाये तो इस लांछन की आग सबके ऊपर आ जायेगी । जितने मत,

पंथ के साधु हैं सबको एकजुट होकर इसका विरोध करना चाहिए। यदि ऐसा न किया गया तो यह आग हम सबको जला देगी। मेरा सबसे विनम्र निवेदन है कि हिन्दुस्तान के सभी नागरिक चाहे किसी भी मत के हों, अन्याय के विरोध में इकट्ठे होकर आवाज उठायें। हम बापू के साथ किये गये इस अपमान को सहन नहीं करेंगे।

९. श्री १००८ महामंडलेश्वर, शांतिगिरीजी महाराज :

संतों व संस्कृति की रक्षा ही देश की रक्षा है, मानव-रक्षा है, सुहृदता की रक्षा है। जो हिन्दु धर्म की जड़ों को उखाड़ना चाहते हैं, ऐसे साजिशकर्ता सुनियोजित ढंग से कितना भी कुप्रचार करें, उनकी साजिशों से बचाव और संस्कृति की रक्षा करनेवाले स्तंभरूपी संतों के सुप्रचार में दृढ़ रहना ही समय की माँग है, सज्जनता की रक्षा है, मानवता व देश की रक्षा है। हिन्दुओं को उद्यमी साहसी, बुद्धिमत्ता से सुसंगठित होकर हमारी जड़ों को उखाड़नेवाली विदेशी आँधियों को विफल करना होगा।

पूज्य बापूजी के सेवाकार्यों और महानता को कौन नहीं जानता ? सभीको उनसे लाभान्वित होना चाहिए। ऐसे संतों का दुष्प्रचार करना-सुनना पाप है।

१०. महंत श्री धीरजजी, बाबा बालकनाथजी सिद्ध पीठ :

चैनलों में एक संत (बापू) के लिए बहुत अनर्गल चीजें आयीं, जो मैं समझता हूँ बहुत बड़ा कुठाराघात है। इससे पहले बाबा रामदेव पर भी बोलने लगे ये लोग परंतु कुछ नहीं हुआ, उसके बाद अब बापू आसारामजी पर। देखिये, यह कोई किसी संत पर टिप्पणी नहीं है, यह भारतीय संस्कृति पर टिप्पणी है। यह उनका बहुत बड़ा षड्यंत्र है जो हिन्दू संस्कृति को पूरी तरह विफल करने का प्रयास कर रहे हैं। हम सबको एकजुट होकर इनका सामना करना पड़ेगा। यह आज इनके साथ हो रहा है, कल किसी और संत के साथ होगा।

मीडिया में जो भाषा बोली जा रही है, उस भाषा पर हमें बहुत दिक्कत है, बहुत एतराज है।

११. महामंडलेश्वर श्री सुनील शास्त्री महाराज :

एक ही समाज, एक ही धर्म है - सत्य धर्म, सनातन वैदिक धर्म और वह यही सिखाता है कि **'जीयो और जीने दो'**, **'अहिंसा परमो धर्मः।'** अगर यही धर्म नहीं रहा तो विश्व में क्या होगा ? अतः इस धर्म का उपहास मत करो, वरना पूर्ण विश्व ब्रह्मांड में ही प्रलय हो जायेगा। और तुम मत छेड़ो शक्ति को, अगर तुम शक्ति को छेड़ोगे तो क्या होगा ? उदाहरण है कि **'न रहा कोई कुल रोवन हारा।'** रावण ने छेड़ा तो **'न रहा कोई कुल रोवन हारा।'** और जब कृष्ण के समय में छेड़ा गया सत्य को, धर्म को तो धृतराष्ट्र के लिए **'न रहा कोई कुल रोवन हारा।'** मुगलों ने छेड़ा उस कुल में नहीं रहा कोई, अंग्रेजों ने छेड़ा नहीं रहे। तो मैं भी आज कह रहा हूँ कि जो व्यक्ति तुम्हारे गुरु को या हमारे संत को छेड़ेगा उसको गति क्या, अधोगति क्या, नरक क्या, नरक से भी निम्न गति प्राप्त होगी। आप सभी लोग सबल रहें, प्रबल रहें, संगठित रहें और माँ भारती की रक्षार्थ अपने गुरु के आदेशानुसार सत्य के मार्ग का अनुसरण करते हुए आगे बढ़ें। आज संत-समाज का आशीर्वाद आपके साथ है, आपके साथ है, आपके साथ है।

१२. डॉ. रामप्रपन्नाचार्यजी महाराज, धर्म जागरण मंच :

परम पूज्य श्रद्धेय श्री आसारामजी बापू हमारे भी श्रद्धेय हैं, आप (शेष पृष्ठ २९ पर)

स्वाधीनता का सदुपयोग

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

दो सूत्र हैं - मिली हुई स्वाधीनता का सदुपयोग करें, दुरुपयोग नहीं और पराधीनता पसंद न करें।

आप बोलने में स्वाधीन हैं - मधुर बोलें या कटु बोलें, झूठ बोलें या सत्य बोलें। मधुर बोलेंगे तो वाणी का सदुपयोग होगा, कटु बोलेंगे तो वाणी का दुरुपयोग होगा। आप विचार करने में स्वाधीन हैं कि विषय-विकार, शत्रु-मित्र का विचार करें या आत्मा-परमात्मा का विचार करें। आपके पास बल है, उस बल का दूसरों को सताने में दुरुपयोग करें या **'बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय'**, आत्मरक्षा में सदुपयोग करें; मिले हुए बल को, मिली हुई वाणी को, मिली हुई योग्यता को पाप-ताप में, ईर्ष्या-द्वेष में खर्च करें कि परोपकार, ध्यान, ज्ञान में खर्च करें इसमें आप स्वाधीन हैं। मिली हुई शक्तियों का दुरुपयोग नहीं करेंगे तो सदुपयोग होने लगेगा अथवा सदुपयोग ही करेंगे तो दुरुपयोग से बच जायेंगे।

'हमें पराधीनता पसंद नहीं, स्वाधीन होंगे...' तो भाई! संसार के जो भी भोग हैं उनमें पराधीनता है। पति-पत्नी की पराधीनता से पति-पत्नी का भोग, ऐसे ही विषय-वस्तुओं की पराधीनता से विषय-वस्तुओं का भोग। जो पराधीन भोग हैं उनमें बल, बुद्धि, तेज, तंदुरुस्ती और पुण्य क्षीण होते हैं। जो स्वाधीन भोग हैं उनमें बल, बुद्धि, तेज, तंदुरुस्ती बढ़ते हैं। आत्मसुख स्वाधीन है। आत्मसुख में आपको पत्नी की, पुत्र की गुलामी नहीं करनी पड़ेगी, पिता की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आत्मसुख में, आत्मध्यान में, आत्मप्रेम में आप स्वतंत्र हैं लेकिन शरीर के प्रेम में तो दूसरा शरीर चाहिए और वह बीमार होगा, झगड़े होंगे, ज्वालामुखी फूटेंगे और एक-दूसरे को छोड़कर मरेंगे। शारीरिक संबंध से मिलनेवाला सुख पराधीन है। पराधीनता पसंद न करें और स्वाधीन सुख में प्रवेश करें तभी पराधीनता का आकर्षण छूटेगा।

कई बुद्धिमानों का कहना है कि भगवान ने इन्द्रियाँ बहिर्मुख बनायीं, इन्द्रियाँ आकर्षित हो जाती हैं लेकिन महान संतों का अनुभव है कि इन्द्रियाँ न अंतर्मुख हैं, न बहिर्मुख। आप स्वाधीनता की तरफ आते हो, अंतर्मुख होना चाहते हो तो इन्द्रियाँ अंतर्मुख हो जाती हैं और पराधीन, गुलाम होना चाहते हो, पराधीन सुख लेना चाहते हो तो इन्द्रियाँ बहिर्मुख हो जाती हैं। 'कुछ देखकर मजा लें, कुछ खाकर मजा लें, कुछ भोगकर मजा लें...' खाओ, देखो लेकिन निर्वाह के हिसाब से औषधिवत्। खाने की स्वतंत्रता मिली है तो पेट को गोदाम मत बनाओ। देखने की स्वतंत्रता मिली है तो आँखों को कचरापट्टी से मत भरो। सोचने की स्वतंत्रता मिली है तो ऐसा गलत न सोचो, गलत विचार दिमाग में न भरो कि आप गुलाम हो जाओ। नाक मिली है, आप क्या सूँघते हैं ? सात्त्विक पुण्यमयी गंध सूँघते हैं कि उत्तेजना बढ़ानेवाली ? बाजार का इत्र सूँघकर कामविकार उत्तेजित करते हैं या भगवान को अर्पित किये हुए पुष्प, सुगंधित द्रव्य सूँघते हैं, आप स्वतंत्र हैं। भगवान कहते हैं : **पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च...** 'मैं पृथ्वी में पवित्र गंध हूँ।' **(गीता : ७.९)**

संबंधों का भी सदुपयोग करें, दुरुपयोग नहीं। पति-पत्नी के संबंध का सदुपयोग है कि पति आध्यात्मिक राह पर है तो पत्नी को भी आध्यात्मिकता का रंग लगाये। एक-दूसरे के पोषक बनकर ब्रह्मचर्य पालते हुए, संयमी जीवन जीते हुए तेजस्वी बच्चों को जन्म दें। ऑपरेशन कराकर, एक-दूसरे की कमर तोड़कर स्वास्थ्य का सत्यानाश न करें।

मिली हुई वस्तुओं का, धन का सदुपयोग करें चाहे दुरुपयोग करें, आप स्वतंत्र हैं। आत्मा का स्वाधीन सुख चाहते हैं तो और चीजों में भी आप स्वाधीन हो जायेंगे। इन्द्रियों का, विषय-विकारों का पराधीन सुख चाहते हैं तो और बातों में भी आप पराधीन हो जाते हैं। स्वाधीन होने की कृपा कीजिये। अधिकार का, मिले हुए धन का सदुपयोग करेंगे तो और बढ़ेगा, निखार आयेगा और दुरुपयोग करेंगे तो वही चीजें दुःखदायी हो जायेंगी। दुरुपयोग करना दुःख के बीज बोना है। कितना सरल है यह ज्ञान ! लेकिन दुरुपयोग करने की आदत पुरानी है इसीलिए सदुपयोग करना जरा कठिन लगता है और कठिनता मिटाने के लिए साधना करनी पड़ती है।

मिली हुई स्वतंत्रता का सदुपयोग करें तो आप स्वतंत्र हो जायेंगे, आप महान हो जायेंगे। आपमें मृत्यु के सिर पर पैर रखने का सामर्थ्य आ जायेगा। फिर जन्म-मृत्यु की गुलामी की जंजीरें सदा के लिए टूट जायेंगी, सत्यस्वरूप परमात्मा का साक्षात्कार हो जायेगा। ❐

निर्दोष है निस्संग है, बेरूप है बिनु रंग है।
तीनों शरीरों से रहित, साक्षी सदा बिनु अंग है ॥
सुख शांति का भण्डार है, आत्मा परम आनन्द है।
क्यों भूलता है आपको ? तुझमें न कोई द्वन्द्व है ॥
(आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'आत्मगुंजन' से)

संस्कारों के लिए सरकारी कोष का सदुपयोग

रघु राजा का दरबार लगा हुआ था। एक प्रश्न पर चर्चा हो रही थी कि 'राज्यकोष का उपयोग किन उद्देश्यों के लिए किया जाय ?'

एक पक्ष ने कहा : ''सैन्यशक्ति ही समृद्ध राष्ट्र का आधार है, अतः सैन्यशक्ति बढ़ायी जाय। इससे देश की सुरक्षा भी होगी और हम अपने देश की सीमाओं का विस्तार करने में भी समर्थ होंगे। युद्ध होने पर पराजित देशों का धन भी अपने कोष में जमा होगा, इससे देश की आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी।''

दूसरा पक्ष था : ''धन का व्यय प्रजा को सुसंस्कार प्रदान करने में होना चाहिए। संयमी, विवेकी, साहसी, बुद्धिमान, धर्मनिष्ठ तथा आत्मप्रकाश की भावनाओं से भरा प्रत्येक नागरिक एक दुर्ग होगा, जिसे कोई भी जीत नहीं सकेगा। किसी भी देश की शक्ति धन में नहीं वरन् सदाचारी व्यक्तियों में निहित है। शील की शक्ति के आधार पर कोई भी छोटा देश चक्रवर्ती बन जाता है।''

दोनों पक्षों के तर्क सुनने के पश्चात् राजा रघु ने निर्णय किया कि राज्य का कोष प्रमुख रूप से प्रजा की शिक्षा तथा संस्कार पर खर्च होगा। वैसा ही किया गया जिसके परिणामस्वरूप धीरे-धीरे प्रजाजन प्रत्येक दृष्टि से समुन्नत हो गये। पड़ोसी राज्यों को उनके चरित्र-बल के समाचार मिलने लगे तो उन्होंने इस राज्य पर कभी भी आक्रमण करने का स्वप्न तक नहीं देखा। अन्य देशों के समर्थ लोग भी यहाँ आकर बसने लगे। भूमि भी सोना उगलने लगी। हर क्षेत्र में देश समृद्ध होने लगा। इसीके परिणामस्वरूप मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी का अवतरण इस कुल में हुआ। ❐

संत परहित के लिए विपत्ति सहते हैं

- स्वामी प्रणवानंद

'श्रीरामचरितमानस' के उत्तरकांड में गोस्वामी तुलसीदासजी ने काकभुशुंडिजी के श्रीमुख से कहलवाया है कि -

पर उपकार बचन मन काया ।
संत सहज सुभाउ खगराया ॥
संत सहहिं दुख पर हित लागी ।
पर दुख हेतु असंत अभागी ॥
भूर्ज तरू सम संत कृपाला ।
पर हित निति सह बिपति बिसाला ॥

'हे पक्षिराज गरुड़ ! मन, वचन और शरीर से परोपकार करना यह संतों का सहज स्वभाव है । संत दूसरों की भलाई के लिए दुःख सहते हैं और अभागे दुर्जन दूसरों को दुःख पहुँचाने के लिए । कृपालु संत भोज के वृक्ष के समान दूसरों के हित के लिए भारी विपत्ति सहते हैं ।'

(उ.कां. : १२०. ७-८)

जब-जब संतरूपी सूर्य प्रकाशित हुआ है, तब-तब विरोधियोंरूपी बादलों ने उस सूर्य को ढकने का प्रयास किया है । जब-जब इस धरा पर संत अवतरित हुए हैं, तब-तब इन कुप्रचाररूपी आँधी-तूफानों ने उन पर आपत्तियों की वर्षा करने की कोशिश की है। अतः भारत का भला चाहनेवाले, संस्कृति की सेवा करनेवाले समझदारों को संगठित रहना चाहिए - यह मदन मोहन मालवीय के विचार अमल में लाने का अवसर है । इतने आँधी-तूफानों के बावजूद महापुरुषों ने समाज के हित की शुभेच्छा और प्रयास न छोड़े । सज्जन उनके द्वारा उन्नत हुए एवं दुर्जनों के प्रति या तो संत खामोश रहे या उन्हें थोड़ा-बहुत सावधान करते गये ।

गुरु नानकजी ने सावधान किया तो उनके लिए निंदकों ने कोई कसर बाकी न रखी । गुरु नानकजी को तो बाबर के कान भरवाकर जेल में डलवा दिया गया था । किसी सिख से पूछो : ''गुरु नानकजी में कोई ऐब था इसलिए जेल में गये थे क्या ?''

सिख बोलेगा : ''उनमें कोई ऐब थोड़े ही था किंतु आत्मघाती हत्यारों के ऐबों के कारण सच्चे बादशाह को जेल में जाना पड़ा ।''

लेकिन उस समय तो दुष्टों ने ऐसा ही वातावरण बनाया था कि नानकजी में ही ऐब है, इसलिए उन्हें जेल जाना पड़ा । भक्त जानते हैं कि नानकजी में ऐब नहीं था, कबीरजी में ऐब नहीं था, सुकरात में ऐब नहीं था, मीराबाई में कोई ऐब नहीं था, निंदकों-कुप्रचारकों के षड्यंत्र के कारण ही उन पर आरोप लगाये गये थे और मिलीभगत से वे आरोप सच्चे साबित कर दिये गये ।

संत तुकारामजी के साथ तो कितना घोर अन्याय किया था निंदकों ने ! शिवबा कासर, जो पहले तुकारामजी की निंदा करता था, बाद में उनका भक्त बन गया और एक दिन उसने उन्हें अपने घर भजन के लिए बुलाया । पति को संत का रंग लगता देख उसकी दुष्ट पत्नी ने साजिश रची । जब तुकारामजी उनके घर पहुँचे तो उनसे स्नान का आग्रह किया गया । जब वे स्नान के लिए चौकी पर बैठे तो उस कुलटा ने उनकी पीठ पर उबलता हुआ पानी डाल दिया ।

तुकारामजी प्रभु से प्रार्थना करने लगे कि

''तुम ही सँभालना, विट्ठल !''

उबलता हुआ पानी तो डाला गया तुकारामजी की पीठ पर लेकिन फफोले निकले शिवबा कासर की पत्नी की पीठ पर ! इलाज करते-करते थके पर कोई लाभ नहीं हुआ। तब किसीने कहा : 'हो सके तो संतों के दैवी कार्यों में सहभागी होकर अपना भाग्य बना लो । अगर भाग्य नहीं बनाना है तो निंदक होकर दुर्भाग्य को क्यों आमंत्रण देते हो ? अब उन्हीं तुकारामजी महाराज के श्रीचरणों में प्रार्थना करो । उन्हें पवित्र गंगाजल से स्नान करवाओ और स्नान के समय जमीन पर पानी पड़ने से जो मिट्टी गीली हो जायेगी वह फफोलों पर लगाओ तब काम बनेगा ।'

शिवबा कासर ने तुकारामजी से प्रार्थना की और जब तुकारामजी के स्नान से गीली हुई मिट्टी उस कुलटा ने पीठ पर लगायी तब उसके फफोले मिटे ।

अगर परमात्मा और प्रकृति संत के पक्ष में न रहें, सत्य का पक्ष न लें तो निंदक और विरोधी तो संतों व धर्म के लिए ऐसा जहर फैलायें कि धरती पर संत बनने को कोई तैयार ही न हो। प्रकृति और परमात्मा संतों के दैवी कार्य में सहभागी होते हैं एवं उनके विरोधियों की अच्छे-से खबर ले लेते हैं । तभी हजारों निंदक आये और मर-मिट गये किंतु संतों की यश-पताका तो आज भी फहरती रहती है, सत्संगियों का प्रेम बढ़ता ही रहता है, श्रद्धा बढ़ती ही रहती है ।

'श्रीरामचरितमानस' में आता है :

होहिं उलूक संत निंदा रत ।
मोह निसा प्रिय ग्यान भानु गत ॥

'संतों की निंदा में लगे हुए लोग उल्लू होते हैं, जिन्हें मोहरूपी रात्रि प्रिय होती है और ज्ञानरूपी सूर्य जिनके लिए बीत गया (अस्त हो गया) होता है ।' **(उ.कां. : १२०.१३)**

संत कबीरजी कहते हैं :

कबीर ते नर अंध हैं, गुरु को कहते और ।
हरि के रूठे ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर ॥

'सुखमनी साहिब' में आता है :

संत का निंदकु महा अतताई ।
संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई ।
संत का निंदकु महा हतिआरा ।
संत का निंदकु परमेसुरि मारा ।

'संत की निंदा करनेवाला बड़ा पापी है । संत का निंदक एक क्षण भी नहीं टिकता । संत का निंदक बड़ा घातक होता है । संत के निंदक को ईश्वर की मार पड़ती है ।'

संत का दोखी सदा सहकाईऐ ।
संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ।
संत के दोखी की पुजै न आसा ।
संत का दोखी उठि चलै निरासा ।

'संत का दुश्मन सदा कष्ट सहता रहता है । संत का दुश्मन न जीता है, न मरता है । संत के दुश्मन की आशा पूर्ण नहीं होती । संत का दुश्मन निराश होकर मरता है ।'

अति पापियों को तो संत-दर्शन में रुचि भी नहीं होती । जिसके पाप नष्ट होते हैं उसीकी श्रद्धा साधु-संतों में टिकती है । अगर कोई कुकर्म करता है तो उसके पाप जोर पकड़ते हैं एवं वह साधु-संतों का विरोधी हो जाता है ।

किसी आदमी के कुल का विनाश होगा या विकास होगा - यह जानना हो तो देखो कि उस आदमी को साधु-संतों के प्रति श्रद्धा है या उनकी निंदा करता है, उस आदमी के विचार ऊँचे हैं कि हलके हैं । ❑

जीवन्मुक्त गुरुजी की जो वाणी है वह शास्त्र है और उसका आचरण धर्म है । जीवन्मुक्त का जो मनोराज्य है वह भगवान की लीला है । उनका जो स्वरूप है वह ब्रह्म है ।

प्रतीक्षा नहीं समीक्षा

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

भगवान की कृपा का हमलोग एहसास नहीं करते वरना तो पद-पद पर उसकी कृपा ही काम कर रही है । ऐसा कोई क्षण नहीं जब उसकी अहैतुकी कृपा न बरसती हो लेकिन दिखने की कोई घड़ियाँ आ जायें... फिर तो तुम कदम-कदम पर उसकी कृपा और उसको महसूस करोगे। जितना तुम्हारा हृदय ईमानदारी से सेवापरायण होता है, त्यागप्रधान होता है उतना ही तुम भगवान की सत्ता और कृपा का अनुभव करते हो । ...अब शब्द क्या कहें पता नहीं, शब्द बेचारे छोटे पड़ जाते हैं।

आज के नास्तिकवाद अथवा अहंकारवाद या वासनावाद ने मनुष्य को इतना उलझा दिया है कि वह भगवान की सत्ता को अस्वीकार करता है और अपने अहं की सत्ता थोपता है । वह भूल ही गया कि एक बूँद से तो उसका शरीर शुरू हुआ और दो मुट्ठी राख में उसकी समाप्ति है । अरे ! तू उसका आदि देख और अंत देख, बीच का तू कब तक सँभालेगा ? यह तो ईश्वर की कृपा है कि तेरे द्वारा वह सत्कर्म करवा रहा है । लेकिन मनुष्य अहंकार सजाता है कि 'मैंने दो लाख फलाने स्कूल में दिये, पचास हजार यहाँ खर्च किये, अभी यह सेवा कर रहे हैं... भगवान की दया है।' अरे, भगवान की दया की बात भी तू अपने अहंकार को पोषने के लिए करता है कि अहंकार को मिटाने के लिए करता है, ईमानदारी से खोज तो अभी-इसी समय कल्याण हो जायेगा। ज्यों-ज्यों तुम वाहवाही के सुख को, विकारी सुखों को महत्त्व देना छोड़ोगे और परमात्मा की करुणा-कृपा का एहसास करोगे, त्यों-त्यों तुम उसकी अनंत कृपा का, अनंत प्रसाद का, अनंत सुख का, अनंत जीवन का दर्शन करने के अधिकारी हो जाओगे ।

जब तुम किसी वस्तु के अहंकार से आबद्ध होते हो तो तुम्हारी वह वस्तु जरूर हटा ली जाती है या प्रकृति उसमें मुसीबत भेज देती है। जिस व्यक्ति से तुम्हारी प्रीति ज्यादा जुड़ती है, उस व्यक्ति और तुम्हारे बीच खटपट हो ही जाती है। होनी ही चाहिए, इसीमें तुम्हारा मंगल है । इस मंगलमय विधान को हम नहीं जानते तो दुःखी होते हैं। परमात्मा कभी प्रतिकूलता और मुसीबत देकर हमारी आसक्ति तथा अहंकार दूर करता है तो कभी अनुकूलता, सुविधा और यश देकर हमारा विषाद दूर करता है। अनुकूलता का भोग करके सर्वहितकारी प्रवृत्ति करें तो अनुकूलता व सफलता का सदुपयोग हमारे विकास का कारण बन जायेगा। अभाव और विषाद के समय अगर उनका उपयोग करें तो वह वैराग्य बढ़ाने का, अपनी कमी निकालने का अवसर बन जायेगा। उस समय विवेक-वैराग्य जगा सकते हैं, अपनी कमी निकाल सकते हैं और विशेष सजगता से उद्यम, साहस, धैर्य और बुद्धिमत्तापूर्वक आगे भी बढ़ सकते हैं। यह उसका मंगलमय विधान है। लेकिन ऐसा दर्शन नहीं है इसलिए हम परेशान हो रहे हैं कि भगवान ने ऐसा क्यों किया ?

हम समीक्षा करें तो हर दुःख के पीछे सजगता, सावधानी एवं सच्चे सुख की प्रेरणा छुपी है और हर सुख व ऐश के पीछे खोखलापन तथा दुःख छुपा है । अगर समीक्षा ठीक-से करें तो ये दुःख और सुख दोनों हमें जगानें का काम करते हैं लेकिन हम इतने भोले हैं कि दुःख को

याद करके दुःखी होते रहते हैं और सुख को चिपकते हुए भी डरते रहते हैं । हम सुख में भी परेशान हैं, दुःख में भी परेशान हैं, बुढ़ापे में भी परेशान हैं, जवानी में भी परेशान हैं, जन्म में भी परेशान हैं और मौत में भी परेशान हैं क्योंकि परम का साथ नहीं पाया । अपने सोऽहं स्वभाव को जान लें तो सब खेलमात्र है । जैसे सिनेमा के पर्दे पर आग लगती है, दरिया उमड़ते हैं, कई डरावने दृश्य आते हैं, कई लुभावने दृश्य आते हैं, समझदार दर्शक उसका आनंद लेता है और अनजान दर्शक उसमें उलझ जाता है ।

हमारा परमात्मा कोई कंगाल नहीं कि हमें एक ही अवस्था में रख दे, एक ही शरीर में रख दे, एक ही परिस्थिति में रख दे । उसके पास अपने प्यारे बच्चों के लिए चौरासी-चौरासी लाख योनियाँ और करोड़ों-करोड़ों अवस्थाएँ हैं । वह हर अवस्था में से पार कराता-कराता आखिर जीवात्मा को अपने स्वभाव में जगाता है ।

हम उसकी कृपा की प्रतीक्षा नहीं करें कि वह कब कृपा करेगा ? प्रतीक्षा उस वस्तु की होती है जिसका अभाव है, जो अभी नहीं है, फिर होनेवाली है । समीक्षा उसकी होती है जो हो रहा है, उसको विवेक से देखना चाहिए । हमारे पास देखने की कला नहीं, होने की आदत है ।

एक होता है - देखना, दूसरा होता है - होना । देखने में आनंद है, होने में परेशानी । सेठों को देख... सब सेठों का सेठ उनमें चमक रहा है, वाह ! आनंद ले, लेकिन तू सेठ होगा तो आयकर (इनकमटैक्स) की व्यवस्था खोपड़ी में रखनी पड़ेगी और गरीब होगा तो रोटी की चिंता करेगा ।

गरीब होने में भी मजा नहीं, अमीर होने में भी मजा नहीं, माई होने में भी मजा नहीं, भाई होने में भी मजा नहीं । केवल भाईपने का स्वाँग अदा करने को देख । तू भाई है तो भाई का स्वाँग अदा कर, माई है तो माई का स्वाँग अदा कर । गरीब है तो गरीब का स्वाँग अदा कर, अमीर है तो अमीर का स्वाँग अदा कर । तू देखनेवाला हो, होनेवाला न हो । इसमें रोने या परेशान होने की क्या बात है ? उसको जो अच्छा लगता है वही तो वह करता है ! 'जिसमें मेरा कल्याण होगा, मेरा मोह तोड़ने का होगा और मेरी यात्रा आगे करने की होगी वही वह करेगा । मैं फरियाद करनेवाला कौन होता हूँ ?' - ऐसा सोच । फरियाद करनेवाला मन है । जो फरियाद कर रहा है उस फरियादी मन के भी साक्षी हो । सावधान रहो लाला-लालियाँ !

हम जैसा चाहें ऐसा वह करे तो क्या हमने भगवान को नौकर रखा है ? हम समीक्षा नहीं कर पाते हैं कि उसको हमारा कितना ख्याल है । हम जैसा चाहें ऐसा वह करे तो क्या उसमें हमारा वास्तविक हित हो सकता है ? हम जैसा चाहते हैं वैसा हो तो हमारी चाह-वासना बढ़ेगी, अहंकार बढ़ेगा, ममता का पाश दृढ़ होगा, राग का राक्षस पुष्ट होगा, द्वेष की अग्नि चित्त को जलाने लगेगी ।

अगर तुम 'इस इंद्रियगत जगत के नश्वर सुखों से ऊपर उठने की थोड़ी मति चाहिए' ऐसी प्रार्थना करते हो तो वह मति भी देता है और मति को बढ़ानेवाला सत्संग भी तो दे रहा है ! परिवार में मोह होता है तो परिवार में कुछ-न-कुछ मुसीबत ले आता है ताकि तुम आगे बढ़ो, आगे बढ़ो । अगर तुम्हें अहंकार होता है तो किसी शत्रु के द्वारा तुम्हारा संघर्ष आदि कराकर तुम्हारा संतुलन करता है और कभी तुम्हें विषाद या थकान या हताशा होती है तो किसी स्नेही तथा मित्र के द्वारा तुम्हें मदद भी तो वह दिलवा रहा है ! तुम सास हो तो बहू के द्वारा भी तुमको ठीक कर रहा है और तुम बहू हो तो सास के द्वारा तुम्हें ठीक करता है । तुम बेटे हो तो बाप के द्वारा तुमको ठीक करता है और तुम बाप हो तो बेटे या दोस्त के द्वारा तुमको ठीक कर रहा है ।

बच्चा मैला होता है तो उसको मलो, धोओ तो बच्चे को बुरा लगता है लेकिन मलना और

धोना माँ की नजर में तो हितकर है । बच्चे को सुंदर कपड़े पहनाती है उस समय भी वह माँ ही है और जब बच्चे को डाँट देती है तब भी माँ है । माँ बच्चे को कड़वी दवा पिलाती है तब भी हित करती है और मीठे पकवान खिलाती है तब भी हित करती है । बच्चे को सुंदर वस्त्र-अलंकारों से सुसज्जित करती है तब भी माँ का हितभाव होता है और काजल का काला टीका लगा देती है उसमें भी माँ की करुणा होती है । ऐसी हजारों माताओं का हृदय मिला हो, तब कहीं मुश्किल से संत और भगवंत के हृदय की कल्पना कर सकते हो। हो सकता है कि माँ अल्पज्ञ हो, अल्प शक्ति और अल्प मतिवाली हो, मोह के कारण पालन-पोषण करती हो कि भविष्य में बेटा सुख देगा लेकिन परमात्मा को व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं है । वह जो कुछ करता है अच्छा करता है ।

जो हो गया अच्छा हुआ, जो हो रहा है अच्छा है, जो होगा अच्छा होगा, यह नियम सरकार का है । तू फरियाद मत कर । तू धन्यवाद देना सीख, तू समीक्षा करना सीख तो जीवन में चार चाँद लग जायेंगे, जीवन चमक जायेगा ।

जीवन में विघ्न-बाधाएँ आती हैं तो उस वक्त तुम धैर्य मत छोड़ो । उस विघ्न की गहराई में उस परमेश्वर की कृपा की समीक्षा करो, उस ईश्वर की कृपा के दर्शन करो ।

तो कृपा की प्रतीक्षा कभी न करना कि कब कृपा करेगा तू ? जो कुछ वह कर रहा है उसकी कृपा है । केवल समीक्षा करो और अपने में उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम आदि सद्गुण विकसित करो । जब भी मनचाहा काम नहीं होता तो समीक्षा करो, मनचाहा काम होता है तो समीक्षा करो, आरोप लगते हैं, अपमान होता है तो समीक्षा करो, मान होता है तो समीक्षा करो । जुल्म होता है तो समीक्षा करो । मेरा कहने का तात्पर्य यह नहीं कि तुम जुल्म सहते रहो । समीक्षा के नाम पर खोखले हो जाओ, ऐसा मेरे कहने का तात्पर्य नहीं है । अपनी तरफ से तुम यथायोग्य पुरुषार्थ करो लेकिन पुरुषार्थ के पीछे परमात्मा का हाथ देखो । अपनी वासना, द्वेष, अहंकार या पलायनवादी स्वभाव का सहारा न लो । अपने व्यवहार के पीछे परमेश्वर की करुणा को आमंत्रित करो । परमेश्वर की कृपा बरस रही है, उसकी समीक्षा करो तो तुम्हारे जीवन में निर्भारता आ जायेगी, निर्द्वन्द्वता का प्रसाद आ जायेगा । तुम हजारों पूजास्थलों में जाओ लेकिन जब तक तुम हृदयेश्वर की कृपा की समीक्षा नहीं करोगे तब तक पूजास्थलों की यात्रा पूरी नहीं होगी । उनकी यात्रा तो तब पूरी हुई जब तुम हृदय-मंदिर के हृदयेश्वर के करीब आने लगते हो । कृपा तो बरस रही है । न जाने किस-किस रूप में बरस रही है । औषधि के रूप में बरस रही है, मिठाई के रूप में बरस रही है, अपमान के रूप में बरस रही है कि सत्संग में जाने की प्रेरणा के रूप में बरस रही है कि सत्संग में जरा कुछ संकेत के रूप में बरस रही है । तुम सावधान हो तो दिन भर उस परमेश्वर की कृपा की वृष्टि-ही-वृष्टि दिखेगी और मन परमेश्वरमय हो जायेगा । फिर प्रारब्धवेग से तुम्हारे पुण्य-पाप, सुख-दुःख बीतते जायेंगे लेकिन समीक्षा करते-करते जिसके विषय में समीक्षा कर रहे हो उस कृपालु के साथ तुम्हारे चित्त का तादात्म्य हो जायेगा । कितना सरल उपाय है, कितना मधुर उपाय है ! तुम्हारा मन ध्यान में लगता है तो बहुत अच्छा है । नहीं लगता है तो देखो : 'मन तू नहीं लगता है । भगवान ! मन नहीं लगता है मेरा । अब मैं क्या करूँ ? तू जान । तेरी कृपा बरस रही है और फिर भी मन नहीं लगता है । नहीं लगता है तो नहीं लगे, हम तो बैठे हैं ।' - ऐसा करके तुम रोओ और मन लगाने का आग्रह छोड़ दो, ऐसे ही बैठे रहो तो उसी समय लग जायेगा । देख मजा, देख चमत्कार ! शर्त है कि तू ईमानदारी से उसका हो जा और समीक्षा कर उसकी कृपा की । ☐

षड्यंत्र ही है !

– सुप्रसिद्ध प्रवचनकार सुश्री कनकेश्वरी देवी

पूज्य बापूजी के बारे में चल रहे कुप्रचार के बारे में सुप्रसिद्ध प्रवचनकार कनकेश्वरी देवी ने अपने हार्दिक उद्‌गार व्यक्त किये :

जगद्‌गुरु शंकराचार्यजी हैं, संत आसारामजी बापू हैं, उनके बारे में किसी एक छोटी-बड़ी बात को पकड़ लिया, बिना सोचे-समझे कि इसमें तथ्य क्या है, क्या नहीं है - उसकी जड़ तक पहुँचे बिना उस बात को उछाल दिया गया, बड़े दुर्भाग्य की बात है ! यह भी तो देखना चाहिए कि कितने सारे गरीबों की सेवा उनके आश्रम द्वारा हुई है, कितने लोगों में अन्न-वितरण किया गया है, आदिवासी क्षेत्रों में मिठाई बाँटी जाती है, विद्यार्थियों को हजारों-लाखों कॉपियाँ-नोटबुक वितरित की जाती हैं। मतलब उस बात को बिल्कुल भूल जाना कि उनके द्वारा समाज को कितना लाभ हुआ है, कितना जीवन भी मिला है ! उसको भी तो देखना चाहिए।

अपने ही लोग जुड़ जाते हैं मीडिया के साथ और फिर एक-एक बात को इतना कर देते हैं। अब किसी भी व्यक्ति के दोष ही देखने का तय कर लिया है तब तो हजारों दोष दिखेंगे- चाहे किन्हीं संत-महात्मा में हों, आपमें हों, मुझमें हों। जब तय ही कर लो कि 'भई ! इसके दोष ही देखने हैं' तब तो भगवान में भी दिखेंगे।

समाज के लिए बापू ने अपने-आपको कितना तपाया है ! समाज के लिए कितना योगदान दिया है ! समाज को कितना जीवन दिया है ! उनके द्वारा आज हजारों-लाखों लोगों को जो लाभ हुआ है, उनसे भी तो पूछो ! ऐसे संत के साथ यह जो हो रहा है वह गुजरात के लिए, देश के लिए अच्छी बात नहीं। 'रामायण' में तो लिखा है कि संत-अपराध का जो फल है वह कालांतर में नहीं, त्वरित होता है। सत्संग का जो फल होता है वह भी त्वरित होता है। सत्संग के विषय में लिखा है : **देइ सद्य फल**। सत्संग कालांतर में, साल-दो साल-पाँच साल के बाद फल नहीं देता, सत्संग त्वरित फल देता है। वैसे ही संत-अपराध के लिए भी कहा गया है कि -

साधु अवग्या तुरत भवानी।
कर कल्यान अखिल कै हानी ॥

'हे पार्वती ! संत का अपमान तुरंत ही सम्पूर्ण कल्याण की हानि (नाश) कर देता है।'

तो इससे बड़ा ही नुकसान होता है और कौन सही संत हैं और कौन गलत - यह मेरे ख्याल से तो वही बता सकता है जो खुद सही संत हो। आज कोई भी कहने लगे कि 'संत में यह नहीं होना चाहिए, संत में ऐसा नहीं होना चाहिए, संत को ऐसा नहीं करना चाहिए...' अगर संत में क्या होना चाहिए क्या नहीं, संत किसे कहते हैं - यह तुम जानते हो तो पहले तुम संत बन जाओ। जो संत की परिभाषा को जानता है वह तो खुद ही महान संत हो जायेगा। जो संत की व्याख्या कर रहा है - 'संत में यह नहीं होना चाहिए, वह नहीं होना चाहिए...' तो यह सिर्फ एक बौद्धिक स्तर पर हो रहा है। और किसीमें भी जब कोई राजनैतिक जुड़ जाते हैं, मतलब राजनैतिक हो या जो भी अपने निजी स्वार्थ के लोग जुड़ जाते हैं तो स्वार्थ की आड़ में उनको

संत भी नहीं दिखते, बड़े दुःख की बात है !!! संत तो माफ कर दें, उनको मालूम भी नहीं होता क्या हो रहा है लेकिन प्रकृति माफ नहीं करती है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, जिसे करोड़ों लोग देख रहे हैं, करोड़ों लोग सुन रहे हैं, उसको थोड़ा सत्य के साथ रहना चाहिए, सत्य की उपासना करनी चाहिए।

भारत को तोड़ने का यह बिल्कुल षड्यंत्र ही चल रहा है। बाहर से बहुत लोग भी जुड़े हुए हो सकते हैं। तभी तो यह सब संभव है। षड्यंत्र तो है ही है ! अच्छा तो यह होगा कि समय पर हम अपने लोगों को इस विषय में जागृत करें कि वे अपने धर्म से, अपने शास्त्रों से, अपने गुरुजनों से अश्रद्धा न करें। वरना वहाँ से जो उनको सूत्र मिलते हैं, जिन सूत्रों से उनका जीवन है, किन्हीं संत-महात्मा से एकाध सूत्र मिल जाता है तो वही जीवन को सफल करने की चाबी बन जाता है। इसलिए संत सत्संग वगैरह करते रहते हैं। उस दिशा से ही हम अश्रद्धा कर बैठेंगे तो कैसे चलेगा ? दिखता ऐसा है कि इससे साधु-संतों का नुकसान हो जायेगा, इससे संतों की हानि होगी या फिर संतों के प्रति जो श्रद्धा है वह समाप्त हो जायेगी, लेकिन समाप्त तो परिणाम में वे लोग हो जायेंगे जो संतों के विरुद्ध, सनातन धर्म के विरुद्ध षड्यंत्र कर रहे हैं। सनातन धर्म के बीज की तो स्वयं भगवान रक्षा करते हैं। 'भागवत' में प्रसंग है कि जो पांडवों के वंश का एकमात्र बीज था, उस परीक्षित को जब खत्म करने के लिए अश्वत्थामा ने ब्रह्मास्त्र छोड़ा तो भगवान कृष्ण ने उसकी रक्षा की। तो जो सनातन बीज है, भगवान उसकी रक्षा करते हैं। समाप्ति तो उनकी हो जायेगी जो इसको समाप्त करने पर तुले हुए हैं। लेकिन हमें निष्क्रिय नहीं रहना चाहिए क्योंकि हमारी निष्क्रियता की वजह से हमें सजा होती है, हमें पीड़ा होती है। जो भी कुछ होता है, एक बात तो निश्चित समझ लो कि दुष्ट लोगों की सक्रियता हमें भारी नहीं पड़ रही है, हमको अपने लोगों की निष्क्रियता भारी पड़ रही है। (निष्क्रिय न बनें, कुप्रचार का मुकाबला सुप्रचार से करें। न्याय प्राप्त करने के लिए प्रयास करें।)

सबसे बड़ा सवाल तो यह है कि ये सारी बातें अब एक साथ क्यों निकलीं ? जो लोग कह रहे हैं कि दस साल पहले हमारे साथ अन्याय हुआ था, वे आज क्यों कह रहे हैं ? जो लोग पाँच साल पहले की बात कह रहे हैं कि 'उनके आश्रम में यह घटना हुई थी, दस साल पहले यह घटना हुई थी', वे तब क्यों नहीं बोले ? तो इसके पीछे जरूर लगता है कि भई ! एक घटना जब घट गयी उन बच्चों की, जो बड़ी दुःख की बात है लेकिन जब यह हो गया तो फिर सब लग गये। क्योंकि आज उनको कोई बल दे रहा है पीछे से, मतलब यह कोई साजिश ही है। जो भी मनुष्य हो उसके व सामने असंतुष्टों की संख्या तो रहेगी ही, फिर संत-महात्मा कोई भी हो। आज आप हैं, हम हैं, क्या सब लोग हमसे संतुष्ट होंगे ? जो व्यक्ति जिस प्रकार का स्थान चाहता है, हमने उसको वह स्थान न दिया तो उसके मन में जरूर रोष हो जायेगा। जिस व्यक्ति को जिस प्रकार का काम चाहिए, पद चाहिए आश्रम में, उसे वह न मिला तो वह असंतुष्ट हो गया और असंतुष्ट लोग जो हैं उनको मौका मिलता है तो कोई-न-कोई बात बनाके फिर...। मतलब यह समझना चाहिए कि उसकी असंतुष्टता निकल रही है। जब मनुष्य की इच्छाएँ पूरी नहीं होती हैं तो फिर ऐसे लोग दुःखी करने का, बदनाम करने का मौका ढूँढ़ते हैं। ❐

संत का अपमान करनेवालों का ही अपमान होता है

वह तो गुरु ही है जो हमें विपदाओं से बचाता है, जो हमें अपमार्ग से बचाता है, जो हमें सन्मार्ग पर चलना सिखाता है । ऐसे गुरु का अगर कहीं-न-कहीं, किसी-न-किसी प्रकार से कोई अपमान करने की कोशिश करता है, अगर किसी संत पर कोई उँगली उठती है तो समझ लेना यह उँगली हमारी संस्कृति पर, हमारे ऊपर उठ रही है ।

परम आदरणीय, परम पूजनीय आसाराम बापूजी महाराज ने सबको स्नेह वितरित किया है। उनकी कृपा से निश्चित रूप से भारतीय संस्कृति अक्षुण्ण है। हमारे भारत को, जैसा बापूजी बता रहे हैं, सन् २०११ में विश्वगुरु बनने से कोई भी नहीं रोक सकता है लेकिन हमें सचेत रहना पड़ेगा। हमारी सेंध लगाने के लिए लोग तैयार हैं, हमारे गुरुकुलों को अपमानित किया जाता है। इसलिए निश्चित रूप से हम लोग अभी सावधान हो जायें।

बापूजी अपने-आपको मानें या न मानें लेकिन हम लोग उन्हें भगवान के रूप में मानते हैं क्योंकि उन्होंने हमें जीना सिखाया, उन्होंने हमें मरना सिखाया, उन्होंने हमें गृहस्थ धर्म में चलना सिखाया है। ऐसे बापू को प्रणाम हैं, ऐसी संस्कृति को प्रणाम हैं ! बापू के द्वारा चलाये जा रहे जितने भी गुरुकुल हैं, उन सब में भारतीय संस्कृति की शिक्षा दी जाती है, इसी संस्कृति की प्रेरणा दी जाती है ।

हमें करना केवल यह है कि गुरु की डोर पकड़कर, गुरु की कृपा की डोर पकड़कर हमें अपना जीवनयापन करना है और उस गुरु की सत्कृपा का शनैः-शनैः सब जगह आभास लेना है। जैसे कि भगवान ने कहा : **न दैन्यं न पलायनम्।** हमें बहुत डरना नहीं है, हमें कुछ माँगना नहीं है और भागना भी नहीं है।

आज भले ही लगे कि कहीं-ना-कहीं मेघ के माध्यम से वह प्रकाश, सूर्य कहीं छुप गया है लेकिन याद रखना सूर्य कभी छुपता नहीं है, संत का कभी अपमान नहीं होता है, संत का अपमान करनेवालों का ही अपमान होता है। इसमें कहीं पर भी दो राय नहीं है।

- आचार्य श्री रामगोपाल शुक्ल
उपाध्यक्ष, श्रद्धा चैनल।

***

मीडिया शर्मनाक और विनाशकारी प्रचार कर रही है...

- सर्वोच्च न्यायालय के प्रमुख न्यायाधीश श्री के.जी. बालकृष्णन्

अखबार एवं न्यूज चैनलों द्वारा अप्रमाणित खबरें छापने की प्रवृत्ति स्वतंत्र और न्यायपूर्ण संवैधानिक न्यायिक प्रक्रिया के लिए एक खतरा है। जिस ढंग से 'आधुनिक मीडिया एवं टेली-कम्युनिकेशन्स' किसीके व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप करती है और शर्मनाक एवं विनाशकारी प्रचार कर रही है, उसे अगर रोका न जाय तो उसका परिणाम बड़ा भयानक हो सकता है।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय के प्रमुख

न्यायाधीश श्री के.जी. बालकृष्णन् ने कोची में 'संविधान, मीडिया एवं न्यायालय' पर चौथे 'के.एस. राजमोनी मेमोरियल पब्लिक लॉ लेक्चर' में भाषण दे रहे थे।

हाल में विशेषकर आपराधिक मामलों में 'मीडिया ट्रायल', एक या दूसरे के पक्ष में लोकमत प्रकट करना आदि बढ़ता जा रहा है। न्यायालय में मुकदमा शुरू होने से पहले ही अभियुक्त को दोषी बताया जा रहा था। इससे तो न्यायालयीन कार्यवाही में हर पक्ष का अपने केस को स्वतंत्र, न्यायपूर्ण एवं पक्षपातरहित तरीके से जाँच करवाने का अधिकार जो कि न्यायप्रणालिका की आधारभूमि है, उस पर ही प्रश्नचिह्न लग गया।

मीडिया लोकतांत्रिक स्वतंत्रता के प्रहरी हैं। मीडिया से संबंधित हर व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह जिम्मेदारीपूर्वक तथा देश और समाज के प्रति अपने कर्तव्य को ध्यान में रखते हुए बर्ताव करे। हकीकत में पत्रकार 'नागरिक स्वतंत्रता के चौकन्ने वॉचडॉग्स (निगरानी करनेवाले)' थे। न्यायालयीन कार्यवाहियों की रिपोर्ट देने का मीडिया का अधिकार नागरिकों के जानने के अधिकार से उत्पन्न हुआ है।

मीडिया का यह भी कर्तव्य था कि वह न्यायपूर्ण, निष्पक्ष एवं सही तरीके से रिपोर्ट दे। मीडिया को 'लोकमत की अभिव्यक्ति मात्र' बनने के बजाय 'लोक दबाव' डालनेवाला साधन नहीं बनना चाहिए।

भारत में ऐसे कई प्रसंग हैं जहाँ पर अभियुक्त पर लगे आरोप को लेकर मीडिया ने इस ढंग से विस्तृत इंटरव्यू एवं चर्चाओं का आयोजन किया कि लोकमत के बजाय लोक-दबाव पैदा हो। प्रचार जरूरी है, लेकिन वह जो जिम्मेदार और निष्पक्ष हो। □

परमारथ के कारने, साधु धरा शरीर

वृक्ष कबहुँ नहीं फल भखै, नदी न पीवे नीर।
परमारथ के कारने, साधु धरा शरीर॥

जैसे वृक्ष अपने फलों को स्वयं कभी नहीं खाता, सरिता अपने पानी का स्वयं पान कभी नहीं करती, वैसे ही संतों का जीवन भी अपने लिए नहीं होता है, दूसरों के कल्याण के लिए ही होता है। हालाँकि संतों की यश-कीर्ति से जलनेवाले लोग उनकी यश-कीर्ति को धूमिल करने के बहुतेरे प्रयास करते हैं किंतु इन सबकी परवाह न करते हुए वे संतजन अपने जीवन को परहित में ही व्यतीत कर देते हैं। उनका जीवन तो बस, मानवमात्र को दुःखों से छुटकारा दिलाकर उनके भीतर शांति एवं आनंद भरने में ही खर्च होता है।

सिंध प्रांत में ऐसे ही एक महान संत हो गये- साँईं टेऊँराम। उनके सान्निध्य को पाकर लोग बहुत खुशहाल रहते थे। उनके पास परोपकार, स्नेह और प्रेम का वशीकरण था, जो बापूजी के पास भी दिखाई देता है। निगाहमात्र से लोगों में शांति एवं आनंद का संचार कर देने की शक्ति उनमें थी। उनके सत्संग में मात्र वृद्ध स्त्री-पुरुष ही नहीं, कई युवान-युवतियाँ भी आते थे। उनकी बढ़ती प्रसिद्धि एवं उनके प्रति लोगों के प्रेम को देखकर कई तथाकथित समाज-सुधारकों को तकलीफ होने लगी। समाज-सुधारक भी दो प्रकार के होते हैं। एक तो सज्जन लोग होते हैं और दूसरे वे लोग होते हैं जो दूसरों के यश को देखकर

जलते हैं। उनको होता है कि कैसे भी करके अपनी प्रसिद्धि हो जाय। ऐसे ही कुछ मलिन मुरादवालों ने साँईं टेऊँराम का कुप्रचार शुरू कर दिया। कुप्रचार ने इतना जोर पकड़ा, इतना जोर पकड़ा कि कुछ भोले-भाले सज्जन लोगों ने साँईं टेऊँराम के पास जाना बंद कर दिया।

उस वक्त के सज्जनों की यह बड़ी भारी गलती रही कि उन्होंने सोचा, 'अपना क्या, जो करेगा सो भरेगा।' अरे! कुप्रचार करनेवाले क्यों कुप्रचार करते ही रहें? वे बेचारे करें और फिर भरें, उससे पहले ही तुम उन्हें आँखें दिखा दो ताकि वे दुष्कर्म करें भी नहीं और भरें भी नहीं; समाज की बरबादी न हो, समाज गुमराह न हो। खैर... साँईं टेऊँराम की निंदा एवं कुप्रचार ने आखिरकार इतना जोर पकड़ा कि नगरपालिका में एक प्रस्ताव पास किया गया कि 'साँईं टेऊँराम के आश्रम में जो जायेंगे उनके माता-पिता को पाँच रुपये जुर्माना भरना पड़ेगा।' उस वक्त पाँच रुपये की कीमत बहुत थी। करीब ६० रुपये तोला सोने की कीमत थी तब की यह बात है।

कुछ कमजोर मन के लोगों ने अपने बेटे-बेटियों को साँईं टेऊँराम के आश्रम में जाने से रोका। कुछ तो रुक गये लेकिन जिनको महापुरुष की कृपा का महत्त्व ठीक-से समझ में आ गया था वे नहीं रुके। उनकी अंतरात्मा तो मानो कहती हो कि :

हमें रोक सके ये जमाने में दम नहीं।
हमसे जमाना है जमाने से हम नहीं॥

बीड़ी-सिगरेटवाला बीड़ी-सिगरेट नहीं छोड़ता, शराबी शराब नहीं छोड़ता, जुआरी जुआ खेलना नहीं छोड़ता तो वे सत्संगी, समझदार लोग गुरु के द्वार पर जाना कैसे छोड़ देते? पास करनेवालों ने तो पाँच रुपये का जुर्माना पास कर दिया किंतु सच्चे भक्तों ने साईं टेऊँराम के आश्रम में जाना नहीं छोड़ा।

हमारी जिनके प्रति श्रद्धा होती है उनके लिए हमारे चित्त में सुख देने की भावना होती है। चाहे फिर रामभक्त शबरी हो या कृष्णभक्त मीरा, उनके हृदय में अपने आराध्य को सुख देने की ही भावना थी। साँईं टेऊँराम के शिष्य भी अपने गुरु की प्रसन्नता के लिए प्रयत्नशील रहते थे। अपने गुरु के प्रति अपने अहोभाव को प्रदर्शित करने के लिए अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार पत्र-पुष्पादि अर्पित करते थे। इसे देखकर निंदकों के हृदय में बड़ी ईर्ष्या उत्पन्न होती थी। अतः उन्होंने कुप्रचार करने के साथ-साथ पाँच रुपये दंड का प्रस्ताव भी पास करवा लिया था। कुछ ढीले-ढाले लोग नहीं आते थे, बाकी के साँईं टेऊँराम के प्यारों ने तो आश्रम जाना जारी ही रखा। ईश्वर के पथ के पथिक इसी प्रकार वीर होते हैं। उनके जीवन में चाहे हजार विघ्न-बाधाएँ आ जायें किंतु वे अपने लक्ष्य से च्युत नहीं होते। अनेक अफवाहें एवं निंदाजनक बातें सुनकर भी उनका हृदय गुरुभक्ति से विचलित नहीं होता क्योंकि वे गुरुकृपा के महत्त्व को ठीक से समझते हैं, गुरु के महत्त्व को जानते हैं।

अपने सद्गुरु श्री तोतापुरी महाराज में श्री रामकृष्ण परमहंस की अडिग श्रद्धा थी। एक बार किसीने आकर उनसे कहा : ''तोतापुरी महाराज फलानी महिला के घर बैठकर खा रहे हैं और उन्हें आपने गुरु बनाया ?''

रामकृष्ण बोले : ''अरे! बकवास मत कर। मेरे गुरुदेव के प्रति एक भी अपशब्द कहा तो ठीक न होगा!''

''किंतु हम तो आपका भला चाहते हैं। आप तो माँ काली के साथ बात करते थे, इतने महान होकर भी तोतापुरी को गुरु माना! थोड़ा तो विचार करें! वे तो ऐसे ही हैं।''

रामकृष्ण बोल पड़े : ''मेरे गुरु कलालखाने जायें तो भी मेरे गुरु मेरे लिए तो साक्षात् नंदराय ही हैं।''

यह है सच्ची समझ! ऐसे लोग तर जाते हैं।

बाकी के लोग संसार-समुद्र में डूबते-उतराते रहते हैं। ...तो वे साँईं टेऊँराम के प्यारे कैसे भी करके पहुँच जाते थे अपने गुरु के द्वार पर। माता-पिता को कहीं बाहर जाना होता तब लड़के कहीं भागकर आश्रम न चले जायें यह सोचकर माता-पिता अपने बेटों को खटिया के पाये से बाँध देते और उन्हें बरामदे में रखकर बाहर से ताला लगाकर चले जाते। फिर सत्संग के प्रेमी लड़के क्या करते... खटिया को हिला-डुलाकर तोड़ देते एवं जिस पाये से उनका हाथ बँधा होता उस पाये के साथ ही साँईं टेऊँराम के आश्रम पहुँच जाते। साँईं टेऊँराम एवं अन्य साधक उनके बंधनों को खोल देते। लोगों ने देखा कि ये लोग तो खटिया के पाये समेत आश्रम पहुँच जाते हैं ! अब क्या करें ?

साँईं टेऊँराम अपने आश्रम में ही अनाज उगाते थे। जब कुप्रचारकों ने देखा कि हमारा यह दाँव भी विफल जा रहा है तो उन्होंने एक नया फरमान जारी करवा दिया कि कोई भी दुकानदार साँईं टेऊँराम के आश्रम की कोई भी वस्तु न खरीदे, अन्यथा उस पर जुर्माना किया जायेगा। जब इतने से भी साँईं टेऊँराम की समता, सहनशीलता में कोई फर्क नहीं आया एवं उनके साधकों की श्रद्धा यथावत् देखी तो उन नराधमों ने आश्रम जिस कुएँ के जल का उपयोग करता था उसमें केरोसिन (मिट्टी का तेल) डाल दिया। क्या नीचता की पराकाष्ठा है ! कितना घोर अत्याचार ! लेकिन साँईं टेऊँराम भी पक्के थे।

संत-महापुरुष कच्ची मिट्टी के थोड़े ही होते हैं ! भगवान की छाती पर खेलने की उनकी ताकत होती है। कई बार भगवान अपने प्रण को त्यागकर भी भक्तों की, संतों की बात रख लेते हैं, जैसे - भीष्म पितामह के संकल्प को पूरा करने के लिए भगवान ने अपने हथियार न उठाने के प्रण को छोड़ दिया था।

साँईं टेऊँराम के कुप्रचार से एक ओर जहाँ कमजोर मनवालों की श्रद्धा डगमगाती, वहीं उनके प्यारों का प्रेम उनके प्रति दिन-ब-दिन बढ़ता जाता। साँईं टेऊँराम अपने आश्रम में एक चबूतरे पर बैठकर सत्संग करते थे। उनके पास अन्य साधु-संत भी आते थे। अतः वह चबूतरा छोटा पड़ता था। यह देखकर उनके भक्तों ने उस चबूतरे को बड़ा बनवा दिया। बड़े चबूतरे को देखकर उनके विरोधी ईर्ष्या से जल उठे एवं वहाँ के तहसीलदार को बुला लाये। उसने आकर कहा कि यह चबूतरा अनधिकृत रूप से बनाया गया है जिसके कारण सड़क छोटी हो गयी है एवं लोगों को आने-जाने में परेशानी होती है। अतः इस चबूतरे को तोड़ देना चाहिए। यह कहकर उसने साँईं टेऊँराम के विरुद्ध मामला दर्ज कर दिया एवं उन्हें अदालत में उपस्थित होने को कहा किंतु निश्चित समय पर साँईं टेऊँराम अदालत में उपस्थित न हुए।

दूसरे दिन जब वे स्नान करके तालाब से लौटे तो देखा कि चबूतरा टूटा हुआ है। संत तो सहन कर लेते हैं किंतु प्रकृति से उनका विरोध सहा नहीं जाता। कुछ समय के पश्चात् उस तहसीलदार का तबादला दूसरी जगह हो गया। उसकी जगह दूसरा तहसीलदार आया जो बड़ा श्रद्धालु और भक्त था। अतः उसने पुनः वह चबूतरा बनवा दिया। जिन्होंने साँईं टेऊँराम को अपमानित करने की कोशिश की, लज्जित और बदनाम करने की कोशिश की, उनकी तो कोई दाल नहीं गली। जिन्होंने साँईं टेऊँराम को निंदित करने का प्रयास किया, उनका कुप्रचार करके उनकी कीर्ति को कलंकित करने का प्रयास किया उनमें से कुछ लोगों ने पश्चात्ताप करके माफी ले ली और बाकी के नीच कृत्य करनेवाले न जाने कौन-से नरक में होंगे ! लेकिन साँईं टेऊँराम के पावन यश का सौरभ आज भी चतुर्दिक प्रसारित होकर अनेक दिलों को पावन कर रहा है। ❑

महाकवि गंग की ईश्वरनिष्ठा

महाकवि गंग बादशाह अकबर के दरबारी कवि थे। दरबार के अन्य कवि अकबर की चापलूसी की ही कविता सुनाया करते थे लेकिन गंग प्रभुभक्त एवं निर्भीक कवि थे। उनकी कविताएँ ईश्वरभक्ति से परिपूर्ण होती थीं। उन्होंने कभी भी बादशाह की प्रशंसा में एक भी कविता नहीं सुनायी। अकबर को यह बात खटकती रहती थी।

एक दिन बादशाह अकबर ने भरे दरबार में कवि गंग को उलाहना देते हुए कहा कि ''कविराज ! आपने समय-समय पर उत्कृष्ट आध्यात्मिक कविताएँ सुनाकर हमारा मन प्रसन्न किया है लेकिन कभी ऐसी कविता नहीं सुनायी जिसमें हमारा गुणगान हो। हम आश्रयदाता हैं, जब चाहें किसीको मालामाल कर दें अथवा ठान लें तो धूल में मिला दें।

आप अब एक ऐसी कविता लिखें, जिसका अंतिम पद हो : **सब मिल आस करें अकबर की।**''

इस पंक्ति का आशय स्पष्ट था कि कविता शहंशाह की स्तुति में होनी चाहिए। कवि गंग से ईर्ष्या करनेवाले भीतर-ही-भीतर बड़े प्रसन्न हुए।

कवि गंग ने तुरंत एक छोटी-सी कविता बना डाली एवं भरे दरबार में सुना भी दी –

एक को छोड़ दूजे को रटे,
रसना ज कटे उस लब्बर की।
आज की दुनिया गनिया को रटे,
सिर बाँधत पोट अकब्बर की ॥
कवि गंग तो एक गोविन्द भजे,
वह संक न माने जब्बर की।
जिनको न भरोसा हो उनका,
वो सब मिल आस करें अकब्बर की ॥

'जो अपने इष्ट को छोड़ किसी दूसरे की स्तुति करता है उस लबार की जीभ कट जाय। आज की दुनिया शासक का नाम रटती है इसलिए अकबर के नाम की गठरी सिर पर उठाये घूमती है। कवि गंग तो एकमात्र गोविंद का दास है, अतः कैसा भी बादशाह हो उससे वह डरता नहीं है। जिसे गोविंद में विश्वास नहीं है वे सब मिलकर अकबर की आशा करें।'

बादशाह यह कविता सुनकर आगबबूला हो गया। उसने कहा : ''तुम्हें इस गुस्ताखी का परिणाम भुगतना पड़ेगा।''

महाकवि ने निडरता से जवाब दिया :

एक हाथ घोड़ा और एक हाथ खर।
कहना था सो कह दिया अब करना हो सो कर।

'गोविंद घोड़ा एवं तुम गधे हो। हमें जो कहना था कह दिया, अब तुम्हें जो करना हो कर लो।'

चाटुकारों ने मौका देख बादशाह को और उकसाया। बादशाह ने आदेश दिया कि ''कवि गंग को हाथी के पैरों तले कुचलवाकर मार दिया जाय।''

उन्हें हाथी के सामने लाया गया। कवि गंग हँसते-हँसते हाथी की तरफ जाते हुए कहने लगे :

कभी न रांड्या रण चढ्या, कभी न बाजी बंध।
सकल सभा को आशीष है, विदा होत कवि गंग।

'धूर्त कभी भी वीर की तरह मैदान में नहीं उतरते हैं और न ही कभी **(शेष पृष्ठ १९ पर)**

पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं

जिन कारणों से हमारी बुद्धि डाँवाडोल हो जाती है उनमें पहला कारण है हीनता का भाव। जब हम अपनेको हीन समझते हैं, मन में हीनता का भाव दृढ़ हो जाता है कि 'हमारे पास यह नहीं, वह नहीं...', तब हम अपनी कमियों को देखने लगते हैं और यह समझने लगते हैं कि हमको फलानी वस्तु से सुख-शांति मिलेगी । इस प्रकार अपना मूल्य कम होकर दूसरे का मूल्य बढ़ जाता है ।

हे ईश्वर के बच्चे ! तुमको अपनी शक्ति की, आनंद की, चेतन की खबर नहीं। तू आँखों से जिस पर प्रियता की नजर डालता है वह प्रिय हो जाता है। तुम प्रिय परमात्मा के अमृतपुत्र हो। ॐ आनंद... ॐ माधुर्य...

कहीं भी बढ़िया लगे तो उसकी गहराई में तुम्हारा ही चैतन्य है, तुम्हीं हो। अपनेको कोसो नहीं। कहीं जाकर, कुछ पाकर सुखी होओगे ऐ सुखस्वरूप ! ऐ चेतनस्वरूप ! ऐ ईश्वर के अमृतपुत्र !

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ।

सर्वत्र वासुदेव अनुभव करनेवाले महात्मा के नजरिये, उनकी सोच में अपनी सोच मिलाओ। उनके अनुभव में एक हो जाओ।

ॐ वासुदेव... ॐ नारायण...

ॐ अच्युताय गोविंदाय अनंताय ।
ॐ अच्युताय गोविंदाय अनंताय ।

जीवन में जिसको अपनी विद्या पर, अपनी बुद्धि पर, अपने कर्म पर आस्था नहीं, दूसरे की विद्या, दूसरे की बुद्धि, दूसरे के कर्म, दूसरे का धन जिसके लिए आदर्श है वह अपने में हीनता का अनुभव करता है। जब हीनता का अनुभव करता है तब असंतुष्ट हो जाता है। इतना रूखा, सूखा, भूखा हो जाता है कि यहाँ से यह लें, वहाँ से यह लें की उसकी प्रवृत्ति हो जाती है।

हीनता के अनुभव का परिणाम ही यह है कि मनुष्य पराधीन जीवन व्यतीत करने लगता है।

पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं ।

- पूज्य बापूजी ❑

(पृष्ठ १८ 'महाकवि गंग की ईश्वरनिष्ठा' का शेष)

उनकी जीत होती है। जो निर्भीक एवं निडर हैं वे ही रण में उतर पाते हैं एवं वे ही सच को कह पाते हैं। सभी सभासदों को हमारा आशीष है, अब हम विदा लेते हैं।'

हाथी द्वारा उन्हें कुचल दिया गया। गोविंद का स्मरण करते-करते उन्होंने प्राण त्याग दिये। उसके बाद भी अकबर का गुस्सा शांत नहीं हुआ। उसने महाकवि गंग के पूरे परिवार को हाथी के पैरों तले रौंदवाने की आज्ञा दे दी।

कई वर्ष के बाद अकबर को कवि गंग द्वारा लिखित एक कविता प्राप्त हुई, जिसकी अंतिम पंक्तियाँ थीं :

गूढ़ की बात में मूढ़ कहा जाने,
भैंस कहा जाने खेत सगे का ।
गंग कहे सुन शाह अकबर,
गधा कहा जाने नीर गंगा का ॥

यह पढ़कर अकबर को खेद हुआ कि उसने एक ईश्वरभक्त कवि की हत्या करवा दी। ❑

सद्गुरु जैसा परम हितैषी कोई नहीं संसार में

सद्गुरु की कृपा का वर्णन करते हुए संत ज्ञानेश्वरजी महाराज 'ज्ञानेश्वरी गीता' के दसवें अध्याय में कहते हैं :

हे गुरुदेव ! आप ही ब्रह्मज्ञान का स्पष्ट बोध कराने में समर्थ हैं। विद्यारूपी कमल का विकास आप ही हैं। संसाररूपी अंधकार का नाश करनेवाले सूर्य आप ही हैं। आपका स्वरूप अमर्याद है। आपका सामर्थ्य अनंत है। मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

आप समस्त संसार का पालन करनेवाले और शुभ कल्याणरूपी रत्नों के भंडार हैं। सज्जनरूपी वन को सुगन्धित करनेवाले चंदन आप ही हैं। आराधना करने योग्य देवता आप ही हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। जिस प्रकार चकोर के चित्त को चंद्रमा संतुष्ट और शांत करता है, उसी प्रकार बुद्धिमानों के चित्त को आप संतुष्ट एवं शांत करते हैं।

आप वेद के ज्ञान-रस के सागर हैं और समस्त संसार का मंथन करनेवाला जो कामविकार है उस कामविकार का मंथन करनेवाले आप हैं। हे गुरुदेव ! इसलिए मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप सद्भक्तों के भजन के पात्र हैं। संसाररूपी हाथी का गंडस्थल तोड़नेवाले आप ही हैं और संसार की उत्पत्ति के आदिस्थान भी आप ही हैं, इसलिए मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

यदि आपकी प्रेमपूर्ण वाणी किसी गूँगे पर भी कृपा करे तो वह भी बृहस्पति के साथ प्रतिज्ञापूर्वक शास्त्रार्थ कर सकता है। केवल यही नहीं, जिस पर आपकी दृष्टि का प्रकाश पड़ जाता है अथवा आपका कोमल हाथ जिसके मस्तक पर जा पड़ता है, वह जीव अपने शिव-स्वभाव में जग जाता है। जिनके कार्यों का ऐसा माहात्म्य है, उनका मैं अपनी मर्यादित वाणी के बल से भला कैसे वर्णन कर सकता हूँ ? क्या कभी कोई सूर्य के शरीर में भी उबटन लगा सकता है ? फूलों से भला कल्पवृक्ष का कहाँ तक श्रृंगार किया जा सकता है ? क्षीरसागर का आतिथ्य भला किस प्रकार के पकवानों से किया जा सकता है ? कपूर को किस सुगन्धित वस्तु से सुगन्धित किया जा सकता है ? चंदन पर किस चीज का लेप लगाया जा सकता है ? क्या आकाश को और भी ऊपर उठाने की कोई युक्ति हो सकती है ? ठीक इसी प्रकार श्रीगुरुदेव के माहात्म्य का पूरा-पूरा आकलन करने के लिए कहाँ और कौन-सा साधन प्राप्त हो सकता है ? ये सब बातें समझकर ही बिना किसी प्रकार की वाचालता किये मैंने उन गुरुदेव को चुपचाप नमस्कार किया है। यदि कोई अपने बुद्धि-बल के अभिमान में यह कहे कि 'मैं गुरुदेव के सामर्थ्य का पूरा-पूरा और ठीक-ठीक वर्णन करता हूँ', तो उसका यह काम चमकीले मोती पर अबरक (अभ्रक) की कलई करने के समान ही हास्यास्पद होगा अथवा गुरुदेव की वह जो कुछ स्तुति करेगा, वह स्तुति खरे सोने पर चाँदी का मुलम्मा करने के समान ही होगी। इसलिए कुछ भी न कहकर चुपचाप गुरुदेव के चरणों में मस्तक रख देना ही सबसे अच्छा है।

मेरी जो बुद्धि बिल्कुल देहभावमयी हो गयी थी, उसे आपने अब ब्रह्मानंद के भंडार की कोठरी बना दिया है। श्रीगुरुदेव के सभी कृत्य ऐसे ही अलौकिक हैं, फिर भला उनकी निस्सीम कृतियों का वर्णन मुझसे कैसे हो सकता है ? फिर भी मैंने उनकी कुछ कृतियों का वर्णन करने का साहस किया है, इसके लिए श्रीगुरुदेव मुझे क्षमा करें। ❒

सर्वोपरि व परम हितकर...

(अंक १८७ से आगे)

देवर्षि नारदजी शुकदेवजी से कहते हैं : जिनमें अनुराग या वासना हो उन पदार्थों में दोषदृष्टि से काम लें क्योंकि यदि वह अनुराग या वासना अनिष्ट को बढ़ानेवाली मानी जाय तो शीघ्र ही मन में उन पदार्थों की ओर से वैराग्य उत्पन्न हो जाता है । बीती हुई बातों के लिए शोक करने से धर्म, अर्थ या यश - कुछ भी तो नहीं मिलता, प्रत्युत धर्मादि का नाश ही होता है और वह शोक नष्ट न होकर उत्तरोत्तर बढ़ता है ।

प्राणियों को अच्छे पदार्थ मिलते भी हैं और उनका वियोग भी होता है । यह सबके लिए एक समान नियम है । **सावधान ! इष्ट वस्तु का वियोग ही दुःख या शोक का कारण है । यदि अपना कोई प्रिय मनुष्य मर गया अथवा खो गया तो उसके लिए जो शोक करता है वह मानो दुःख से दुःख को उत्पन्न करता है । इस प्रकार अनिष्ट-प्राप्ति में शोक करने से दो अनर्थ होते हैं अर्थात् दोहरा दुःख होता है किंतु शोक न करने से दोनों दुःख मिट जाते हैं ।** संसार में इष्ट-अनिष्ट, सुख-दुःख के क्रम को धीरे-धीरे विचार के साथ जो देखते हैं, वे मनुष्य प्रिय-वियोग से न तो दुःखी होते हैं और न रोते हैं । समस्त संसार को भलीभाँति यथार्थ दृष्टि से देखनेवाले कभी नहीं रोते ।

शारीरिक दुःख के नष्ट हो जाने पर यदि मानसिक दुःख उत्पन्न हो जाय और यदि उसे दूर करने का कोई उपाय न दिख पड़े तो उसके लिए न तो चिंता करनी चाहिए और न दुःखी ही होना चाहिए । दुःख को हटाने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि उसके लिए चिंतित न हों क्योंकि चिंता करने से दुःख नष्ट नहीं होता प्रत्युत बढ़ता है । अतएव उसकी ओर से उदासीनता ही श्रेयस्कर है ।

बुद्धि के उत्तम-उत्तम विचारों से मानसिक दुःख को तथा औषधि का सेवन कर शारीरिक असुख को दूर करें - यही बुद्धिमानों का कर्तव्य है । दुःख के समय अज्ञानियों की तरह घबराना नहीं चाहिए । यौवन, सौंदर्य, दीर्घ जीवन, धन का संचय, आरोग्यता और प्रिय वस्तु का संयोग- ये सब अनित्य हैं अर्थात् सदा टिकाऊ नहीं हैं । अतएव बुद्धिमान-विद्वान यौवनादि में लिप्त एवं आसक्त न हों ।

विद्वान और विचारशील लोगों ने अच्छी तरह छानबीन करके तथा संसार के गतागत वृत्तांतों को पढ़-सुनकर यह निर्णय कर दिया है कि मानव-जीवन में सुख की अपेक्षा दुःख ही अधिक है । उनका यह निर्णय निःसंदेह ठीक है । इन्द्रियों के विषयों में प्रेम होने के कारण और मोहवश अप्रिय मृत्यु प्राणियों को आकर घेर लेती है । जो मनुष्य सांसारिक सुख-दुःख की ओर ध्यान नहीं देता वह जीवन्मुक्त हो जाता है । ऐसे मनुष्य को विद्वान लोग शोकसागर से पार हुआ मानते हैं । धनादि ऐश्वर्य का त्याग करने में मनुष्य को बड़ा दुःख होता है । धन की रक्षा करने में भी सुख नहीं मिलता और धन की प्राप्ति में भी बड़े-बड़े कष्ट भोगने पड़ते हैं । अतएव ऐसे धन की यदि हानि हो तो उसके लिए शोक नहीं करना चाहिए क्योंकि जो वस्तु सब समय दुःखदायिनी है उसका नाश होने पर तज्जन्य दुःख का नाश हुआ भी मानना चाहिए । **(क्रमशः)** □

देशवासियों के नाम महामना मदनमोहन मालवीयजी का संदेश

देश की उन्नति के कामों में देशभक्त पारसी, मुसलमान, ईसाई, यहूदियों को साथ मिलकर भी काम करना चाहिए। यह भारतवर्ष, जो हिन्दुस्तान के नाम से प्रसिद्ध है, बड़ा पवित्र देश है। धन, धर्म, सुख का देनेवाला यह देश सब देशों से उत्तम है। कहते हैं कि देवता लोग यह गीत गाते हैं कि 'वे लोग धन्य हैं जिनका जन्म भारतभूमि में होता है, जिसमें जन्म लेकर मनुष्य स्वर्ग का सुख और मोक्ष, दोनों को पा सकता है।' यह हमारी मातृभूमि है, हमारी पितृभूमि है!

चिन्तन के बस तीन गान।
हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान ॥

जो लोग सारे संसार का उपकार चाहते हैं, उनको उचित है कि इस धर्म की रक्षा और प्रचार करें। पृथ्वीमंडल पर जो वस्तु सबसे अधिक प्यारी है वह धर्म है और वह धर्म सनातन धर्म (हिन्दू धर्म) है।

जाके मन प्रभु तुम बसौ, सो कासों डर खाय?
सिर जावे तो जाय प्रभु, मेरो धरम न जाय॥
जो हठ राखै धरम कौ, तेहि राखे करतार।

एक समय था जब भारतवर्ष समस्त जगत को केवल अपनी धार्मिक तथा आध्यात्मिक शिक्षाओं द्वारा ही नहीं अपितु विज्ञान, कला-कौशल, उद्योग-धंधों आदि समस्त विद्याओं द्वारा उपकृत करता था। दुःख है कि समय के परिवर्तन से भारत की सब उन्नतियों का वर्तमान समय में ह्रास होता जा रहा है।

वर्तमान घटनाचक्र के आलोचकों और निरीक्षकों में से बहुतों का यह निश्चित मत है कि परिस्थिति का यह रूप क्षणिक नहीं है और हिन्दू जाति को यदि जीवित रहना है तो उसे कमर कसकर तैयार हो जाना चाहिए। वर्षों, दशाब्दियों से हिन्दुओं की मनोवृत्ति धर्म की अपेक्षा राष्ट्रीयता की ओर अधिक झुक रही है। **हिन्दू सत्य, प्रेम और अहिंसा का विश्वासी है। उसमें युद्ध की भावना का अभाव है और परस्पर लड़ाई-झगड़े से उसे घृणा है। हिन्दुओं की इस मनोवृत्ति का लाभ उठाकर आतताई लोग हिन्दुओं को दबाते जा रहे हैं। हिन्दुओं को भयमुक्त होकर बहादुर और मजबूत बनना चाहिए।**

बहुसंख्यक हिन्दू जाति के लिए मृत्यु का परवाना लेकर आनेवाली इस महामारी के आक्रमण के विरुद्ध हिन्दुओं को सिर उठाना चाहिए। चेतावनी की घंटी बज जानी चाहिए। कमर कसकर तैयार होकर, अपने दृष्टिकोण को सैनिक रूप देकर जो हिन्दुओं को शांति के साथ रहने देना नहीं चाहते, उनके प्रति किसी प्रकार की सहिष्णुता नहीं हो सकती। रक्षा की व्यवस्था निश्चय ही इतनी प्रभावशाली हो कि आक्रमण निश्चित रूप से व्यर्थ हो जायें। आत्मसम्मान ऐसी बहादुरी से भरा होना चाहिए कि जिससे स्फुट आक्रमण भी निश्चित रूप से व्यर्थ हो जायें। हिन्दुओं को निश्चय ही अपने प्रत्येक हिन्दू भाई के प्रति कर्तव्यपालन करने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए और उन्हें अपनेको धन्य मानना चाहिए कि वे उन ऋषि और महात्माओं के धर्म के अनुयायी हिन्दू हैं, जिन्होंने मनुष्यों की वास-स्थली वसुंधरा को स्वर्ग बनाने की चेष्टा की और समस्त विश्व को कुटुम्बवत् मानकर भ्रातृत्व का जगत में प्रचार किया।

हिन्दुओं को हिन्दुओं की सेवा अवश्य करनी

चाहिए। हिन्दुओं को आज अपने संरक्षण की बड़ी आवश्यकता है अगर वे बर्बरतापूर्ण आक्रमण, मिथ्या राजनीतिक प्रचार अथवा मेल-मिलाप की नीति की मिथ्या कल्पना के द्वारा अपने धर्म को मरने नहीं देना चाहते, अपनी संस्कृति को मिटने नहीं देना चाहते और अपनी संख्या को घटने नहीं देना चाहते हैं। यदि हिन्दू अपनी रक्षा नहीं करेंगे तो मर जायेंगे। यदि वे अपना संगठन नहीं करेंगे तो उनके नष्ट होने में देर न लगेगी। यदि वे पिछड़े रहे तो क्रियारहित निर्जीव बना दिये जायेंगे। उन्हें अकर्मण्य बिल्कुल नहीं रहना चाहिए। उनमें आत्मविश्वास व साहस अवश्य होना चाहिए। उन्हें मरने से कभी नहीं डरना चाहिए। **उन्हें परस्पर भाई-भाई की तरह प्रेम करना चाहिए और प्रत्येक हिन्दू के प्रति सहनशील बनना चाहिए, परंतु उनके प्रति बिल्कुल सहनशील नहीं होना चाहिए जो उन्हें शांति के साथ नहीं रहने देना चाहते। हिन्दू-हिन्दू तो सहनशील रहें लेकिन उनको सतानेवालों के प्रति सहनशील न हों।**

मैं इस प्रकार की प्रेरणा करना अपना कर्तव्य समझता हूँ क्योंकि इस समय मानवता दाँव पर लगी हुई है, हिन्दू संस्कृति और हिन्दू धर्म खतरे में हैं, परिस्थिति संकटापन्न है और ऐसा समय आ गया है कि हिन्दू एक होकर सेवा व सहायता के साधनों को परिपुष्ट करें और अपनी रक्षा करें तथा अपने स्वत्व को प्रभावशाली बनायें।

केवल धर्म और संस्कृति के नाम पर ही नहीं, अपनी प्यारी जन्मभूमि के नाम पर भी समस्त हिन्दुओं से मैं अपील करता हूँ कि यदि वे चिरकाल तक शांति चाहते हैं और ऐसा संदेश देना चाहते हैं कि जिसको अन्य जाति एवं धर्म के लोग सुनें तो वे एक हो जायें और अपनी रक्षा करें। यदि वे (अन्य जाति एवं धर्म के लोग) हिन्दुओं के साथ शांति के साथ रहना चाहते हैं तो उन्हें निश्चय ही हिन्दुओं के धर्म का आदर करना पड़ेगा। ❐

व्यक्तित्व और व्यवहार

✲ किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का पता उसके व्यवहार से ही चलता है। कई लोग व्यर्थ चेष्टा करते हैं। एक होती है सकाम चेष्टा, दूसरी होती है निष्काम चेष्टा और तीसरी होती है व्यर्थ चेष्टा। व्यर्थ की चेष्टा नहीं करनी चाहिए। किसीके शरीर में कोई कमी हो तो उसका मजाक नहीं उड़ाना चाहिए वरन् उसे मददरूप बनना चाहिए। यह निष्काम सेवा है।

✲ किसीकी भी निंदा नहीं करनी चाहिए। निंदा करनेवाला व्यक्ति जिसकी निंदा करता है उसका तो इतना अहित नहीं होता जितना वह स्वयं अपना अहित करता है। जो दूसरों की सेवा करता है, दूसरों के अनुकूल होता है, वह दूसरों का जितना हित करता है, उसकी अपेक्षा उसका खुद का हित ज्यादा होता है।

✲ अपने से जो उम्र में बड़े हों, ज्ञान में बड़े हों, तप में बड़े हों, उनका आदर करना चाहिए। जिस मनुष्य के साथ बात करते हो वह मनुष्य कौन है यह जानकर बात करो तो आप व्यवहारकुशल कहलाओगे।

✲ दृढ़ निश्चयवाले को प्रतिकूलता में भी राह मिल जाती है। इस प्रकार दृढ़ श्रद्धा से, दृढ़ संकल्प से किया हुआ जप-ध्यान बहुत लाभ देता है। दृढ़ संकल्प के बल से मीराबाई ने विष को अमृत में बदल दिया था और विषधर सर्प भी नौलखा हार बन गया था। महावीर स्वामी भी दृढ़ता से लगे तो अपने परम लक्ष्य तक पहुँच गये। कहते हैं कि महात्मा बुद्ध भी वृक्ष के नीचे दृढ़ संकल्प करके बैठे और अंत में लक्ष्य-प्राप्ति करके ही उठे। ऐसे ही आप भी छोटा-मोटा नियम तो लें परंतु दृढ़ता से उसे पूरा करें।

(आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'कल्याणनिधि' से) ❐

जीवनशक्ति का विकास

(गतांक से आगे)

(५) लोकसंपर्क व सामाजिक वातावरण का प्रभाव : एक सामान्य व्यक्ति जब दुर्बल जीवनशक्तिवाले लोगों के संपर्क में आता है तो उसकी जीवनशक्ति कम होती है और अपने से विकसित जीवनशक्तिवालों के संपर्क से उसकी जीवनशक्ति बढ़ती है । कोई व्यक्ति अपनी जीवनशक्ति का विकास करे तो उसके संपर्क में आनेवाले लोगों की जीवनशक्ति भी बढ़ती है और वह अपनी जीवनशक्ति का ह्रास कर बैठे तो और लोगों के लिए भी समस्या खड़ी कर देता है ।

तिरस्कार व निंदा के शब्द बोलनेवाले की शक्ति का ह्रास होता है। उत्साहवर्धक, प्रेमयुक्त वचन बोलनेवाले की जीवनशक्ति बढ़ती है ।

यदि हमारी जीवनशक्ति दुर्बल होगी तो आस-पास के वातावरण से हलके भाव, निम्न कोटि के विचार संक्रामक रोग की तरह हमारे चित्त पर प्रभाव डालते रहेंगे । पहले के जमाने में लोगों का परस्पर संपर्क कम रहता था, इससे उनकी जीवनशक्ति अच्छी रहती थी । आजकल बड़े-बड़े शहरों में हजारों लोगों के बीच रहने से जीवनशक्ति क्षीण होती रहती है क्योंकि प्रायः आम लोगों की जीवनशक्ति कम होती है, अल्प विकसित रह जाती है ।

रेडियो, टीवी, अखबार, सिनेमा आदि के द्वारा बाढ़, आग, खून, चोरी, डकैती, अपहरण आदि दुर्घटनाओं के समाचार पढ़ने-सुनने या उनके दृश्य देखने से जीवनशक्ति का ह्रास होता है। समाचार पत्रों में हिटलर, औरंगजेब जैसे क्रूर, हत्यारे लोगों के चित्र भी छपते हैं, उनको देखकर भी प्राणशक्ति क्षीण होती है। बीड़ी-सिगरेट पीते हुए व्यक्तियोंवाले विज्ञापन व चित्र देखने से भी जीवनशक्ति अनजाने में ही क्षीण होती है। विज्ञापनों, सिनेमा के पोस्टरों में जो अर्धनग्न चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं, वे भी जीवनशक्ति के लिए घातक हैं ।

देवी-देवताओं के, संत-महात्मा-महापुरुषों के चित्रों के दर्शन से अनजाने में ही जीवनशक्ति का लाभ होता रहता है ।

(६) भौतिक वातावरण का प्रभाव : व्यवहार में जितनी कृत्रिम चीजों का उपयोग किया जाता है उतनी जीवनशक्ति को हानि पहुँचती है। टेरिलीन, पोलिएस्टर आदि सिन्थेटिक कपड़ों से तथा रेयॉन, प्लास्टिक आदि से बनी हुई चीजों से जीवनशक्ति को क्षति पहुँचती है। रेशमी, ऊनी, सूती आदि प्राकृतिक चीजों से बने हुए कपड़े, टोपी आदि से यह नुकसान नहीं होता । अतः सौ प्रतिशत कुदरती वस्त्र पहनने चाहिए । आजकल शरीर के सीधे स्पर्श में रहनेवाले अंतर्वस्त्र आदि प्रायः सिन्थेटिक होने के कारण जीवनशक्ति का ह्रास होता है। आगे चलकर इससे कैंसर होने की संभावना रहती है ।

रंगीन चश्मा, इलेक्ट्रॉनिक घड़ी आदि पहनने से प्राणशक्ति क्षीण होती है । ऊँची एड़ी की चप्पल, सैंडल आदि पहनने से जीवनशक्ति कम होती है। रसायन लगे हुए टिश्यू पेपर से भी प्राणशक्ति को क्षति पहुँचती है । प्रायः तमाम परफ्यूम्स सिन्थेटिक (कृत्रिम) होते हैं । वे सब हानिकारक सिद्ध हुए हैं । बर्फवाला पानी पीने से भी पाचनशक्ति कम होती है । किसी भी प्रकार की फ्लोरेसेन्ट लाइट, ट्यूबलाइट के सामने देखने से जीवनशक्ति कम होती है । हमारे वायुमंडल में करीब पैंतीस लाख रसायन मिश्रित हो चुके हैं। उद्योगों के कारण होनेवाले इस वायु-प्रदूषण से भी जीवनशक्ति का ह्रास होता है। **(क्रमशः)** □

'अभी दिल्ली दूर है'

सूफी संत निजामुद्दीन औलिया निर्दोष जनता का खून बहानेवाले तथा लूटमार करनेवाले बादशाहों और सत्ताधारियों से दूर रहते थे। केवल अमीर खुसरो ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जो गयासुद्दीन तुगलक के दरबार में सेवारत भी थे और औलिया के शिष्य भी।

बादशाह ने कई बार औलिया को खुसरो तथा अन्य कई लोगों के द्वारा संदेशा भेजा कि वे खानकाह (दरगाह) में आना चाहते हैं। हर बार औलिया ने इनकार कर दिया। एक दिन तो उन्होंने यहाँ तक कहा कि ''अगर बादशाह इस दरवाजे से अंदर आयेगा तो मैं उस दरवाजे से बाहर चला जाऊँगा।''

बादशाह ने खुसरो से कहा कि ''तुम अगर औलिया को राजी नहीं कर पाये तो मैं तुमसे नाराज हो जाऊँगा।''

खुसरो बोले : ''आप नाराज हुए तो केवल जान जायेगी लेकिन मेरे औलिया नाराज हुए तब तो ईमान ही चला जायेगा।''

बादशाह इतना नाराज हुआ कि जब वह अपने प्रवास के कारण दिल्ली से दूर था, दिल्ली पहुँचने में उसे सात दिन का समय लगता, तभी उसने यह फरमान जारी कर दिया कि ''औलिया की खानकाह को नष्ट कर दिया जाय।''

दिल्ली का कोतवाल औलिया का मुरीद (शिष्य) था। वह रोज जाकर उन्हें बताता कि अभी बादशाह दिल्ली से कितना दूर है। एक बार तो वह दौड़ते हुए औलिया के पास गया और बोला : ''तीसरे दिन तो वे दिल्ली पहुँच ही जायेंगे।''

कोतवाल की बात सुनकर औलिया एक ही उत्तर देते : ''दिल्ली अभी दूर है।''

अंत में कोतवाल बहुत उदास होकर औलिया के पास पहुँचा और बोला कि ''शहंशाह कल दिल्ली पहुँच रहे हैं।''

औलिया ने फिर वही जवाब दिया : ''दिल्ली अभी भी दूर है।''

उसी दिन शाम को खबर आयी कि शहंशाह गयासुद्दीन तुगलक अपने स्वागत में बने भारी-भरकम द्वार के गिर जाने से दुर्घटनाग्रस्त होकर मर गया। वह दिल्ली कभी नहीं पहुँच सका।

कहा भी है :

संत सताये तीनों जायें, तेज बल और वंश।
ऐड़ा-ऐड़ा कई गया, रावण कौरव केरो कंस॥

***

बुरी नीयतवाले सिकंदर की भी यहीं तकदीर फूटी थी

सिकंदर जब भारत से बेबीलोन लौट रहा था तब उसकी मृत्यु हो गयी। सेनापति सेल्यूकस उसकी लाश लेकर बेबीलोन पहुँचा। वहाँ की जनता ने जब उसकी मृत्यु का समाचार सुना तो बहुत दुःखी हुई। उनका दुःख देखकर सेल्यूकस ने सिकंदर के गुरु अरस्तू से दुःखी जनता को शांत करने के लिए कहा।

अरस्तू बोले : ''मैं जानता था, देवताओं, संतों और ऋषि-मुनियों के देश भारत पहुँचकर मेरा प्यारा शिष्य सिकंदर हार जायेगा। मैंने उससे कहा था कि वह विश्वविजय का सपना लेकर भारत कभी न जाय। यदि जाय तो वहाँ के ऋषि-मुनियों और संतों से ज्ञान की संपत्ति लेकर लौटे। वह भारत को लूटने, उस पर कब्जा करने, सोना-चाँदी तथा जवाहरातों का भंडार लाने का विचार त्याग दे, पर उसने मेरी एक न सुनी और उसकी दुर्गति हुई।'' ❑

...और अब 'अघोर लीला'

विगत लगभग २ महीनों से कुछ निहित स्वार्थी तत्त्वों द्वारा पूज्य संत श्री आसारामजी बापू की छवि बिगाड़ने का जो कुत्सित प्रयास किया जा रहा है उसको सफल न होता देख वे लोग अब बौखला गये हैं ऐसा प्रतीत होता है। आम लोगों को गुमराह करने के लिए कैसे-कैसे हथकंडे अपनाये जा रहे हैं, उसीका ताजा नमूना उनकी ये 'अघोर लीला' है। तथाकथित अघोरी महाशय पहले तो यह बतायें कि क्या वे मारण मंत्र जानते हैं ? यदि हाँ तो वे एक मक्खी को ही मारण मंत्र के प्रयोग से मारकर दिखायें। अपने को बहुत पाक-साफ बतानेवाला यह अघोरी, देश के दुश्मन आतंकवादियों को अपने मारण मंत्र से क्यों नहीं मारता ? जिन्होंने सैकड़ों निरपराध देशवासियों को बम धड़ाकों में मार डाला, ऐसे आततायियों को दंड देना तो पुण्य का काम है। अघोरी ऐसे कामों में अपने मारण मंत्र का उपयोग क्यों नहीं करता ? एक विश्ववंद्य संत जिनके करोड़ों भक्त हैं और जो भारतवर्ष को अपने गौरवपूर्ण अतीत की बुलन्दियों पर एक बार फिर से पहुँचाना चाहते हैं, जिनके कृपाकटाक्ष से लाखों लोगों का जीवन सुधर गया, कितने ही मरणासन्न लोगों को नया जीवन मिला, उनको एक तुच्छ भड़ंगी अघोरी की सेवा लेनी पड़े - यह कितनी हास्यास्पद बात है। पर वे संत हैं और संत सभीमें उसी 'एक' आत्मसत्ता का दर्शन करते हैं। वे मान-अपमान, राग-द्वेष, शत्रु-मित्र इन सब द्वन्द्वों से पार, समत्व के उच्च शिखर पर विराजमान हैं। इतने लांछन, अफवाह तथा चरित्र-हनन के घृणित प्रयास करनेवालों के प्रति भी उनके मन में कोई शिकायत नहीं है। वे तो यही कहते हैं कि सबका भला हो, भगवान उन्हें भी सद्बुद्धि दें। यही संतत्व है, यही बापूजी की महानता है।

जरा विचार करें - हर काम की एक हद होती है। पिछले २ महीने से पूज्य बापूजी के ऊपर कितने-कितने आरोपों की बौछार हुई। कई चैनल तथा समाचार पत्रों को कितना पैसा दिया गया होगा कि वे लोग सब काम को पीछे कर केवल बापूजी के कुप्रचार में ही जी-जान से भिड़े हैं। वे तो गुरुकुल की घटना को बहाना बनाकर अपना असली मकसद पूरा करने में लगे हुए हैं। इस तरह की दुर्घटनाएँ देश में आये दिन होती रहती हैं। उनको तो इतना नहीं उछाला जाता ! खबरें आती भी हैं तो २-४-६ दिन में समाप्त हो जाती हैं। पर यहाँ तो २ महीने से सिलसिला जारी ही है। कारण बिल्कुल साफ है, यहाँ मुख्य मुद्दा कुछ और ही है। पूज्य बापूजी के कारण जिनका स्वार्थ सफल नहीं हो रहा था, ऐसे स्वार्थी लोग जैसे-तैसे भी उनकी छवि बिगाड़ने का मौका ढूँढ़ रहे थे। गुरुकुल का हादसा उन्हें मुँह माँगी मुराद की तरह मिल गया और उन्होंने अपना घिनौना खेल शुरू कर दिया।

पूज्य बापूजी के लोक-कल्याणकारी कार्यों से उनकी प्रसिद्धि दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। उनके अनुयायियों की संख्या २ करोड़ को भी पार कर चुकी है। अपने शिष्यों को व्यसनों से दूर रहने के उनके उपदेशों से लाखों लोगों ने कोल्डड्रिंक, शराब, सिगरेट आदि से तौबा कर ली है।

विगत कुछ वर्षों से पूज्य बापूजी द्वारा गुरुकुलों की श्रृंखला शुरू की गयी है। ३-४ वर्षों के अल्प समय में ही ये गुरुकुल खूब सफलतापूर्वक चल रहे हैं। इस वर्ष की बोर्ड की वार्षिक परीक्षा में कई गुरुकुलों में शत-प्रतिशत परिणाम भी आये। कई जगह तो ६० प्रतिशत लड़के प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए और कई गुरुकुलों में ८०-८५-९० प्रतिशत तक अंक विद्यार्थियों को प्राप्त हुए। इन गुरुकुलों में बापूजी के दीक्षित सुयोग्य साधकों, अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय ऋषि-परम्परा की गुरुकुल-पद्धति के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा भी दी जाती है। वर्तमान युग के अनुकूल अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ कम्प्यूटर शिक्षा की भी सुंदर व्यवस्था है। जिस कारण आगरा जैसे कई स्थानों पर प्रवेश के लिए इतने बच्चे आ जाते हैं कि उनमें कितनों को प्रवेश नहीं मिल पाता है। बड़े-बड़े शहरों के बड़े स्कूलों में मोटी फीस लेकर चुने हुए

बुद्धिमान लड़कों को लेकर शत-प्रतिशत परिणाम आ जाना तो सामान्य बात है किंतु पिछड़े आदिवासी इलाकों में, जहाँ साधारणतः बच्चे पढ़ाई से दूर भागते हैं - ऐसे क्षेत्रों में सीमित साधनों और सुविधाओं में शून्य प्रतिशत से शत-प्रतिशत परिणाम लाना बड़ी बात है । गुजरात के सरकी लीमड़ी गुरुकुल ने यह उपलब्धि हासिल की है । यह सब देखकर मिशनरियों द्वारा संचालित कई कॉन्वेंट स्कूलों को भविष्य में आनेवाले गंभीर संकट का आभास होने लगा है और वे बापूजी के बढ़ते प्रभाव को सहन नहीं कर पा रहे हैं ।

पूज्य बापूजी द्वारा पिछड़े आदिवासी इलाकों में गरीब बेसहारा लोगों को आश्रम-वितरित राशन कार्डों द्वारा अनाज व रोजमर्रा की आवश्यक सामग्री निःशुल्क उपलब्ध कराना, कई गरीब आदिवासी बच्चों को निःशुल्क भोजन व उच्च शिक्षा का प्रबंध, बेरोजगार लोगों को 'भजन करो, भोजन करो व ३० रुपये नगद प्राप्त करो कार्यक्रम', निःशुल्क भंडारे, प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त इलाकों में निःशुल्क मकान, अन्न-वस्त्र वितरण, बाल संस्कार, युवाधन सुरक्षा अभियान जैसे देश व समाजोन्नति के अनेकों कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं । इन इलाकों में अभी तक मिशनरियों द्वारा धर्मपरिवर्तन का कार्य तीव्र गति से चल रहा था । थोड़े आर्थिक प्रलोभन देकर, भोले-भाले लोगों को बहला-फुसलाकर धर्मपरिवर्तन का इनका काम बापूजी की उदारता तथा निःस्वार्थ सेवा भावना के कारण अवरुद्ध हो गया है । करोड़ों डॉलर वार्षिक खर्च करनेवाली धर्मपरिवर्तन तथा विदेशी संस्कृति का प्रचार करनेवाली ये मिशनरियाँ भी पर्दे के पीछे से बापूजी के कुप्रचार कार्यक्रम में सहयोगी हो रही हों तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।

सत्ता और कुर्सीलोलुप कुछ राजनैतिक पार्टियाँ तथा कुछ राजनेता, जिन्हें अपना व्यक्तिगत स्वार्थ ही सर्वोपरि दिखता है, ऐसे लोगों को भी बापूजी के सत्संगों में दिनोदिन बढ़ती भीड़ से खटक हो रही है क्योंकि ये नेता उन्हें एक पार्टी-विशेष का संत मानते हैं, जबकि बापूजी के सत्संगों में सभी पार्टियों के लोग आते हैं और वे सभीको समान भाव से स्नेह करते हैं । किंतु ये संकीर्ण विचार के स्वार्थी राजनेता हिन्दुओं में फूट डालकर, उन्हें आपस में भिड़ाकर वोट की राजनीति का खेल कर रहे हैं । समाज के दुश्मन, ये देशद्रोही राजनेता हिन्दुत्व की भावना पर प्रहार करने के लिए, हिन्दुओं में आध्यात्मिक चेतना तथा आत्मबल जगानेवाले साधु-संतों पर अनेक प्रकार के झूठे, मनगढ़ंत आरोप व भ्रामक प्रचार द्वारा समाज में उनकी छवि बिगाड़ने का घृणित प्रयास कर रहे हैं ।

पिछले कुछ समय से विदेशों में भी भारत का सम्मान बढ़ा है । विदेशों में भारतीयों ने अपनी योग्यता से उद्योग, व्यापार, नौकरी आदि में कीर्तिमान स्थापित किये हैं । भारत के तेजी से बढ़ते हुए प्रभाव से तथा यहाँ के युवावर्ग की बढ़ती प्रतिभा से कई विदेशी ताकतें चिंतित हैं और वे भी देश में अस्थिरता और अशांति फैलाना चाहती हैं ।

पूज्य बापूजी के सत्संगों का प्रसारण संचार माध्यमों से अब पूरे विश्व के १५६ देशों में होता है और अब वहाँ के लोग भी बापूजी से प्रभावित हो रहे हैं एवं विश्व के अनेकों देशों में पूज्य बापूजी के अनुयायियों की संख्या भी उत्तरोत्तर प्रगति पर है । इस कारण ईर्ष्यावश भी कुछ असामाजिक तत्त्वों की बेचैनी बढ़ रही है । ये असामाजिक तत्त्व उपरोक्त कारणों से देश को संगठित होकर तरक्की की ओर बढ़ते देखना नहीं चाहते । ये तत्त्व ही मिलकर कुप्रचारों, अफवाहों और निंदा का इतना लम्बा दौर चला रहे हैं । आज समाचार पत्र और टीवी चैनलों का तो इतना नैतिक पतन हो चुका है कि आप पैसे खर्च कर जिस पर चाहें जितना मर्जी कीचड़ उछाल दें । कम्प्यूटर टेक्नोलोजी और आधुनिक फोटोग्राफी व साउन्ड मिक्सिंग की टेक्नोलोजी ने इतनी तरक्की कर ली है कि किसीकी बात के एक-एक अक्षर को आप इधर-से-उधर और उधर-से-इधर मनचाहे तरीके से कर सकते हैं । **मोटे प्रलोभनों से ये समाचार पत्र तथा**

चैनलवाले खरीदे जा सकते हैं, अन्यथा आप स्वयं सोच सकते हैं कि एक आकस्मिक दुर्घटना से किसीके उज्ज्वल चरित्र पर आक्षेपों के इतने लंबे दौर का क्या तुक है ।

देश के प्रबुद्ध लोग इन तथ्यों पर विचार करें और संतों पर आक्षेप कर उन्हें समाज से अलग करनेवाले तत्त्वों को पहचानें और उनके बहकावे में न आयें । किसी ढोंगी, शराबी, काले कपड़ेवाले व्यक्ति से साजिशकर्ता द्वारा कुछ भी कहलवा लेना- यह बहुत ही साधारण बात है । 'छः लोगों की सुपारी, पाँच हजार रुपये एडवांस देना, फिर डेढ़ लाख रुपये...' - ये कैसी अनर्गल, वाहियात बातें हैं, सुनियोजित कीचड़ उछालने की बातें हैं। सामान्य बुद्धि का आदमी भी इस पर विचार कर इनकी सत्यता को जान सकता है । मारण मंत्र काम-क्रोध को मारने के लिए होते हैं न कि किसी व्यक्ति को । अगर कोई मंत्र से किसीको मारने का दावा करता है तो वह सफेद झूठ है । अगर मंत्र से किसीको मारा जाता तो अर्जुन-कृष्ण दुर्योधन को मार देते, 'महाभारत' की लड़ाई क्यों करनी पड़ती ? 'डेढ़ लाख में छः आदमियों की सुपारी' - कैसा सफेद झूठ है !

- ओमप्रकाश मिश्र □

रामसेतु की पूजा करने समुद्र में कौन जाता है ?

'रामसेतु की पूजा करने समुद्र में कौन जाता है ?' सर्वोच्च न्यायालय के पूछे गये इस सवाल का जवाब पूर्व केन्द्रीय मंत्री और जनता पार्टी के अध्यक्ष सुब्रह्मण्यम स्वामी द्वारा दिया गया । जवाब में उन्होंने यह कहा कि हम सूर्य की पूजा करते हैं तो क्या सूर्य पर जाते हैं ?

स्वामी के इस जवाब से मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षतावाली तीन न्यायाधीशों की खंडपीठ चकित रह गयी । उन्होंने न्यायालय को बताया कि किस तरह से रामसेतु की खुदाई कर रही हॉलैंड की ड्रेजिंग मशीन बार-बार खराब हुई । उन्होंने कहा कि यह मामला पूरे विश्व के एक अरब हिन्दुओं की आस्था का है । उन्होंने बताया कि जब ड्रेजिंग मशीन के टूटे हिस्सों को निकालने के लिए क्रेन का इस्तेमाल किया गया तो क्रेन भी टूट गयी । अंततः अधिकारियों ने ऐसी क्रेन लगायी जिस पर 'हनुमान' लिखा था, लेकिन तब भी ड्रेजिंग मशीन के टूटे हुए हिस्से नहीं निकाले जा सके । इसके बाद रूसी ड्रेजिंग-विशेषज्ञ को बुलाया गया लेकिन इस ऑपरेशन में वे अपनी टाँगें तुड़वा बैठे । स्वामी के इन तर्कों को खंडपीठ मुस्कराते हुए सुनती रही । उन्होंने कहा कि इसके बाद वही हुआ जो पहले भी हुआ था। एक विधायक ने पूजा-पाठ शुरू करवाया लेकिन अगले ही दिन हार्टअटैक से उनकी मौत हो गयी । इस पर खंडपीठ थोड़ा असहज हो उठी और उन्होंने उनसे पूछा कि आप हमसे चाहते क्या हैं ? इस पर डॉ. स्वामी ने कहा कि 'माई लॉर्ड ! आप यह फैसला दें कि रामसेतु धार्मिक भावनाओं और विश्वास का मामला है और सेतु समुद्रम् प्रोजेक्ट को रद्द कर दें ।' उन्होंने कहा कि हम श्रीलंका और भारत के बीच लघु जलमार्ग बनाने के विरोधी नहीं हैं लेकिन ऐसा अलाइनमेंट चुना जाय, जिससे रामसेतु को कोई नुकसान न पहुँचे । बहस के दौरान डॉ. स्वामी ने ऐसे अनेक दस्तावेजों का उल्लेख किया, जिनमें सरकार ने रामसेतु के अस्तित्व को स्वीकारा है ।

प्रधानमंत्री के कार्यालय से जारी की गयी एक पुस्तक में रामसेतु के मानवनिर्मित होने की बात को माना गया है । तमिलनाडु जानेवाली शताब्दी ट्रेन में भी यह लिखा रहता है कि रामेश्वरम् के पानी में भगवान राम के चरण-कमलों का आशीर्वाद है क्योंकि यहीं से उन्होंने वानर-सेना के साथ लंका पर चढ़ाई कर सीता को छुड़ाया था । उन्होंने कहा कि यदि लोगों की भावनाओं और परम्पराओं की खातिर तमिलनाडु सरकार जल्लीकट्टू (बुल फाइट) जारी रख सकती है तो रामसेतु को छोड़कर कैनाल बनाने के लिए दूसरा अलाइनमेंट क्यों नहीं अपनाया जा सकता है ?

(साभार : कल्याण) □

...ताकि आप जागृत हों

मैं मूल रूप से जकार्ता (इण्डोनेशिया) का रहनेवाला हूँ। मेरा पूर्व नाम रॉबर्ट सॉलोमन रह चुका है। मैं सन् १९९७ तक ईसाई मिशनरी का पादरी था, प्रचारक था। सन् १९९७ के अगस्त माह में 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' और उससे जुड़े स्वयंसेवी संगठनों के बारे में अधिकृत जानकारी प्राप्त करने हेतु चर्च द्वारा मुझे हिन्दुस्तान भेजा गया था। इससे पहले हिन्दू दर्शन व चिंतन को न मैं जानता था और न ही मानता था। हिन्दू संस्कृति से मैं अनभिज्ञ था। चर्च द्वारा भेजे जाने के बाद दो वर्ष तक मैंने हिन्दू दर्शन व हिन्दू चिंतन का अध्ययन किया। उसके बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि भारत एक हिन्दू राष्ट्र है और पूरे विश्व को इसके दिशा-निर्देश की आवश्यकता है।

तन में हिन्दुत्व मन में हिन्दुत्व,
रग-रग में हिन्दुत्व मेरा परिचय है।
गूँज उठी हर घाटी है,
चंदन इस देश की माटी है।
कौन लड़ेगा हमसे, किसमें है दम ?
राम का बेटा किससे है कम!

हमें खुशी है कि विश्वप्रसिद्ध, विश्वविख्यात पूज्य आसाराम बापूजी के लिए हम अपनेको लगा पाये। हमारी पहचान ऋषि-मुनियों की परम्पराओं के कारण ही है। आज हमारे संस्कारों के ऊपर मैकालेपुत्रों ने प्रहार करने की चेष्टा की है। हिन्दुओं का धर्मांतरण इसलिए हो रहा है क्योंकि हिन्दू मुँहतोड़ जवाब देना नहीं जानते। अभी मैं हिन्दू संस्कृति का प्रचारक बनकर समाज का कार्य कर रहा हूँ। 'आसारामजी' स्वयं में पावन नाम है। संत-परंपरा पर आक्षेप लगाने का दुःसाहस किया गया है। बापूजी के लिए जिन शब्दों का उपयोग हुआ है वे बहुत-बहुत निंदनीय हैं।

ईसाई मिशनरियों के कुछ एजेंडे हैं जो मैं आपको बता देना चाहता हूँ ताकि आप सतर्क हो जायें। ईसाइयों का मूल मकसद भारतीय राजनीति को पूरी तरह अपने शिकंजे में लेना है। इसी कारण बार-बार हम पर प्रहार किया जा रहा है। सेवा की आड़ में तथा कॉन्वेंट स्कूलों द्वारा वे अपना कार्य कर रहे हैं।

बड़ी मुश्किल से मिली है आजादी,
हम इसे खोने नहीं देंगे।
देश में रह रहे गद्दारों को,
चैन से जीने नहीं देंगे॥

– डॉ. सुमनजी
(भूतपूर्व पादरी रॉबर्ट सॉलोमन)
हिन्दू धर्मरक्षा मंच, झारखंड। ❐

(पृष्ठ ४ 'संतों के साथ ऐसा क्यों' का शेष)

सबके भी श्रद्धेय हैं। आज उनके ऊपर विदेशी षड्यंत्र के द्वारा जो आतंक फैलाया जा रहा है उसका हम सबको मुकाबला करना है।

१३. महामंडलेश्वर स्वामी श्री देवेन्द्रानंद गिरीजी महाराज :

यह देश कृषि और ऋषि-प्रधान देश है। हमारे संत आसारामजी बापू समग्र भारतीय परम्परा को लेकर चलते हैं। आज बापूजी के खिलाफ जो साजिशें रची जा रही हैं उनका हम निषेध करते हैं। संपूर्ण भारत के संत आपके साथ हैं। ❐

त्रिदोष-सिद्धांत

शरीर की सभी क्रियाएँ वात के कारण, परिवर्तन पित्त के कारण व गठन कफ के कारण होता है । जब ये अपनी सम अवस्था (न घटे हुए न बढ़े हुए) में होते हैं तब शरीर की वृद्धि, बल, वर्ण, प्रसन्नता उत्पन्न करते हैं परंतु जब विषम अवस्था में होते हैं तब रस-रक्तादि सप्तधातुओं को दूषित कर देते हैं । शरीर के अन्य घटकों को दूषित कर रोग उत्पन्न करने के कारण इन्हें दोष कहा जाता है ।

तीनों दोष संपूर्ण शरीर में व्याप्त रहते हैं । फिर भी नाभि से निचले भाग में वायु का, नाभि से हृदय तक के मध्य भाग में पित्त का व हृदय के ऊपरी भाग में कफ का आश्रयस्थान है ।

उम्र, ऋतु, दिन, रात्रि व भोजन के अनुसार इनकी स्वाभाविक ही वृद्धि व शमन होता है ।

वयोऽहोरात्रिभुक्तानां तेऽन्तमध्यादिगाः क्रमात् ।

'बाल्यावस्था में कफ, युवावस्था में पित्त व वृद्धावस्था में वायु स्वयं ही बढ़ जाते हैं ।'

(अष्टांगहृदय : १.८)

दिन के तीन भागों में से प्रथम भाग (प्रातः ६ से १०) में कफ, द्वितीय भाग (१० से २) में पित्त व तृतीय भाग (२ से ६) में वायु की वृद्धि होती है । वैसे ही रात्रि के प्रथम भाग (शाम ६ से १०) में कफ, मध्यरात्री (१० से २) में पित्त व अंतिम भाग (२ से ६) में वायु की वृद्धि होती है ।

भोजन के तुरंत बाद कफ की, पाचनकाल में पित्त की व पचने के बाद वायु की वृद्धि होती है ।

वसंत ऋतु (फाल्गुन-चैत्र) में कफ का, शरद (भाद्रपद-आश्विन) में पित्त व वर्षा (आषाढ़-श्रावण) में वायु का प्रकोप काल के प्रभाव से हो जाता है ।

वायु की अधिकता से जठराग्नि विषम (अनिश्चित समय पर कभी ज्यादा तो कभी कम भूख लगना), पित्त की अधिकता से तीव्र व कफ की अधिकता से मंद हो जाती है ।

यह त्रिदोष-सिद्धांत आयुर्वेद चिकित्सा-शास्त्र का आधारस्तंभ है । स्वास्थ्य की रक्षा व रोगों के निर्मूलन के लिए इसका सामान्य-ज्ञान आवश्यक है । **(क्रमशः)**

***

भाद्रपद में विशेष सेवनीय

भाद्रपद महीने में शरीर में पित्त स्वाभाविक ही बढ़ जाता है । इसे समय पर शांत न किया जाय तो यह आगे चलकर रोगों का निमित्त बन जाता है । कड़वा रस पित्तशामक है, इसलिए भाद्रपद में कड़वे पदार्थों का सेवन विशेषरूप से करने का विधान है । यह अरुचिकर तो है परंतु सेवन करने पर अरुचि को दूर करता है, विष के प्रभाव को मिटाता है तथा कृमियों को नष्ट करता है । यह शरीर में संचित अतिरिक्त मेद, चरबी, सूक्ष्म मल, मल-मूत्र, पसीना, पित्त और कफ का नाश करता है तथा रक्त को शुद्ध करता है । कड़वे पदार्थों में करेला, मेथी, मेथीदाना, हल्दी, नीम, चिरायता, बेल, गिलोय सेवनीय हैं । परवल का सेवन श्रेष्ठ है । भाद्रपद में दही व लौकी का सेवन सर्वथा निषिद्ध है । ☐

कृपया भक्तों के हृदय को ठेस पहुँचाने का कार्य न करें

मैं अजय शर्मा आश्रम में रहकर समाज-उत्थान के दैवी कार्य में संलग्न हूँ। मेरी माताजी द्वारा लगाये गये आक्षेपों से मैं अत्यंत आहत हूँ। मैंने CA (final-I), ICWA (inter), B.Com. (Hons.) Delhi से किया है। मैं अपनी मर्जी से सोच-समझकर, बिना किसी दबाव के बहुत ही सुख एवं शांतिपूर्वक पूज्य बापूजी के आश्रम में पिछले १२ साल से रह रहा हूँ। न यहाँ कोई वशीकरण होता है, न तंत्र विद्या। यदि यहाँ ऐसा होता तो एक मिनट भी मैं यहाँ न रहता। आश्रमवालों ने मुझे कैद करके नहीं रखा बल्कि घरवालों ने मुझे कैद करके रखा था। घरवालों ने एक बार परिवार के साथ व दूसरी बार गुंडों को बुलाकर मेरा अपहरण किया था। पहली बार जब घर के बंद तालों से निकलने में सफल हुआ तो दूसरी बार मेरे पैरों में गाय-भैंस को बाँधनेवाली जंजीर लगा दी गयी और जब वहाँ से भी आश्रम वापस आने में सफल हुआ तो अब घरवाले मुझे ४० वर्ष की उम्र में शादी की बेड़ियाँ लगाना चाहते हैं, जो मुझे कदापि स्वीकार नहीं है।

पूज्य बापूजी ने तो स्वयं २ बार मुझे घर भेजा है और दूसरी बार जब उसी दिन नहीं निकला तो अगले दिन डाँटा था। मैं अपना समग्र जीवन पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में बिताना चाहता हूँ।

घरवालों के द्वारा मेंटली टॉर्चर किये जाने की भी हद होती है। पिछले काफी समय से मैं यह सहन कर रहा था, लेकिन अब तो बर्दाश्त से बाहर हो गया है। जब हर व्यक्ति को इंजीनियरिंग, मेडिकल आदि उसका मनपसंद क्षेत्र चुनने का अधिकार है, तो मैंने समाजसेवा का क्षेत्र जीवन-लक्ष्य के रूप में चुना है तो इसमें किसीको क्यों आपत्ति होनी चाहिए ? विदेश में पैसा कमाने के लिए गया होता और घरवालों को पैसा भेजता रहता तो वह उनको स्वीकार होता लेकिन समाजसेवा, राष्ट्रसेवा एवं आत्मकल्याण में मैं अपना समय सार्थक कर रहा हूँ तो यह उन्हें स्वीकार नहीं है।

मैं तो सभीसे प्रार्थना करूँगा कि आप भी अपने जीवन में से कुछ समय निकालकर इस आध्यात्मिक वातावरण का अनुभव करें तो आपको भी लगेगा कि हीरे-मोती जैसा समय कंकड़ के भाव बेमोल बिता रहे हैं।

जीवनोद्धारक, परम कल्याणकारी ऊँचे आध्यात्मिक सिद्धांत गीता, भागवत, रामायण आदि शास्त्रों में केवल पढ़ने को मिलते हैं परंतु आश्रम में रहते हुए तो उनका अनुभव होता है। पूज्य बापूजी के पावन-प्रेरक मार्गदर्शन में चलायी जा रहीं - गरीबों में भंडारे, बाल संस्कार केन्द्र, व्यसनमुक्ति अभियान, गरीब-गुरबों में अन्न-वस्त्र वितरण इत्यादि अनेक समाजसेवा की प्रवृत्तियों में सहभागी होकर मैं अपने-आपको धन्य मान रहा हूँ। साथ-ही-साथ ईश्वरप्राप्ति के मार्ग पर भी अग्रसर हो रहा हूँ। मैं इसे मनुष्य-जीवन का अनमोल सुअवसर मानता हूँ। मेरी आप सभीसे प्रार्थना है कि कृपया इस विषय को लेकर पूज्य बापूजी व आश्रम की छवि को धूमिल करने के षड्यंत्र में शामिल न हों तथा करोड़ों-करोड़ों श्रद्धालु भक्तों के हृदयों को ठेस पहुँचाने का कार्य न करें।

– अजय शर्मा (साधक)
संत श्री आसारामजी आश्रम,
अमदावाद। ☐

संस्था समाचार

नोयडा (उ.प्र.), १६ व १७ अगस्त : श्रावणी पूर्णिमा व रक्षाबंधन का पर्व नोयडा के विशाल मैदान में निराले अंदाज में मनाया गया। लाखों की संख्या में आत्मशांति के प्यासे गुरुभक्तों ने तेज आँधी-वर्षा की परवाह किये बिना पूज्य बापूजी के सत्संग-अमृत का आस्वादन किया। इस अमृतपान के आगे बाहर के कष्टों को दो कौड़ी का कर दिया बापू के प्यारों ने ! निंदकों के द्वारा की जा रही निंदा को, फैलायी जा रही अफवाहों को भी पैरों तले कुचल दिया बापू के दुलारों ने ! एक नहीं, दो नहीं पूरा-का-पूरा पंडाल दीवाना हो गया था बापूजी के दर्शन-सत्संग से। इधर सत्संग-स्थल पर लाखों की संख्या में भक्त सत्संग-दर्शन का लाभ उठा रहे थे तो उधर श्रद्धा चैनल पर न जाने कितने ही बापू के प्यारों ने श्रद्धापूर्वक जीवंत प्रसारण द्वारा सत्संग-अमृत व पूर्णिमा दर्शन का लाभ लिया।

रक्षाबंधन पर्व पर जहाँ एक तरफ भाई-बहन पवित्रता से पर्व लाभ उठा रहे थे वहीं दूसरी तरफ साधक-भक्त अपने गुरुवर को हृदयपूर्वक श्रद्धा का अटूट सूत्र बाँधकर अपने जीवन को भय, अशांति व राग-द्वेष से सुरक्षित कर रहे थे।

श्रद्धालु भक्तों की विशाल उपस्थिति देख लगता था मानो वे कहते हों : ''हम श्रद्धालु साधकों की श्रद्धा तोड़ सके, वो निंदकों में दम नहीं।''

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर, लाखों श्रद्धालु आये थे।
निंदा को पैरों तले कुचलकर, श्रद्धा सुमन जगाये थे॥

पूज्य बापूजी का अभिनंदन करने 'बाबा बालकनाथ सिद्ध पीठ' के महंत श्री धीरजजी भी पधारे। उन्होंने पूज्य बापूजी के खिलाफ की जा रही टिप्पणियों को भारतीय संस्कृति पर किया गया प्रहार बताया। कभी जयेन्द्र सरस्वती, कभी स्वामी रामदेव, कभी सत्य साँईं बाबा, कभी अमृतानंदमयी माँ और न जाने कितने ही साधु-संतों का अपमान, कुप्रचार, निंदा करके भारत की नींव उखाड़नेवाले असामाजिक तत्त्वों के षड्यंत्रों से उन्होंने जनता को सावधान किया व समाज-विघातक तत्त्वों की कड़ी आलोचना की।

जन्माष्टमी पर्व, सूरत (गुजरात), २३ व २४ अगस्त : जिनकी महिमा वेदों में, पुराणों में उपनिषदों में गायी गयी है, जिनकी स्तुति ब्रह्मादि देवता करते-करते थकते नहीं ऐसे विश्ववंदनीय गीताकार भगवान श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी का पर्व हमें हर वर्ष आनंदित-उल्लसित करने आता है।

जिनके स्मरणमात्र से हमारे मन-मति में आनंद व आत्मिक अनुभूति होती है, ऐसे भगवान श्रीकृष्ण के 'गीता' में वचन हैं : **स महात्मा सुदुर्लभः।** जो सब में वासुदेव देखते हैं ऐसे महात्मा दुर्लभ नहीं सुदुर्लभ हैं। जो भगवान श्रीकृष्ण की नजरों में सुदुर्लभ हैं ऐसे **वासुदेवः सर्वम्** की दृष्टि से सम्पन्न पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन में जन्माष्टमी पर्व पर लाखों भक्तों ने हँसते-गाते, खेलते-कूदते, नाचते-नचाते इस पर्व का आनंद लिया और बापूजी के तात्त्विक प्रवचन द्वारा आत्मिक ज्ञान की गहराइयों में गोता लगाने का महा सौभाग्य भी प्राप्त हुआ सूरतवासियों को।

लाखों भक्तों ने जन्माष्टमी पर्व का दोहरा लाभ उठाया। एक तो मक्खन-मिश्री से शरीर को पुष्ट किया तो दूसरा सत्संग-सुधा से मन-मति को भी पुष्ट किया। मटकी-फोड़ कार्यक्रम से अध्यात्म-मनोरंजन का लाभ लिया, साथ-ही-साथ सत्संग में अहं छोड़कर सच्चिदानंद कृष्ण की आध्यात्मिक मक्खन-मिश्री का लाभ लिया। धन्य हुए भक्तजन, धन्य हुए सूरतवासी ! धन्य हुआ जन-जन का मन !

बालक-वृद्ध सभीके चेहरों पर आंतरिक प्रसन्नता झलक रही थी। ऐसे महा आयोजन का संस्कार चैनल ने जीवंत प्रसारण भी किया।

पूज्य बापूजी के लिए हुए कुप्रचार ने भक्तों की श्रद्धा को और भी दृढ़ बना दिया, श्रद्धा को दिव्य श्रद्धा में परिणत कर दिया। इसी दिव्य श्रद्धा को जगाने के लिए भगवान ने अर्जुन से कहा : **'श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं...'** और अष्टावक्र मुनि ने राजा जनक से कहा : **श्रद्धत्स्व तात श्रद्धत्स्व...** भक्तों ने इस बात को अंगीकार करके मानो पूर्ण जन्माष्टमी मनायी। सूरत गुरुकुल के विद्यार्थियों ने आध्यात्मिक नृत्य व अपना कला-कौशल प्रस्तुत कर जन्माष्टमी पर्व को और भी आनंदप्रद बनाया। ❑

संतों के साथ ऐसा क्यों ???

पढ़ें पृष्ठ : २

महामंडलेश्वर बालयोगी पूज्य अर्जुनपुरीजी महाराज

अफवाहों में उन्हें फँसाकर बदनाम किया जा रहा है।
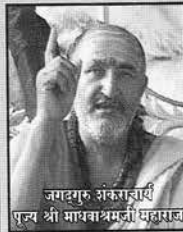
जगद्गुरु शंकराचार्य पूज्य श्री माधवाश्रमजी महाराज

संस्कृति की रक्षा में जुट जाना चाहिए।

आनंदपीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर पूज्य श्री देवानंदजी महाराज

आज सनातन हिन्दू धर्म–समाज इकट्ठा होकर इसके विरुद्ध आवाज न उठाये तो...

श्री १००८ महामंडलेश्वर शांतिगिरीजी महाराज

हमारी जड़ों को उखाड़नेवाली विदेशी आँधियों को विफल करना होगा।

निर्वाणपीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर पूज्य विश्वदेवानंदजी महाराज

यह भारत की अस्मिता के साथ खिलवाड़ का षड्यंत्र है।

महामंडलेश्वर श्री सुनील शास्त्री महाराज

हमारे संत को छेड़ेगा उसकी गति क्या, अधोगति क्या, नरक क्या, नरक से भी निम्न गति प्राप्त होगी।

महामंडलेश्वर पूज्य हरिचेतनानंदजी महाराज

जिस महापुरुष ने सनातन धर्म के लिए अपना जीवन लगा दिया...

महामंडलेश्वर पूज्य श्री आनंद चेतन सरस्वती

वे हमारे देश के केन्द्रबिन्दु को नष्ट करना चाहते हैं।

निरंजनी पंचायती अखाड़ा के सचिव श्री त्र्यंबक भारतीजी महाराज

संतों का अपमान प्रजा के लिए एक अशोभनीय बात है।

महामंडलेश्वर पूज्य श्री शिव प्रेमानंदजी महाराज

गुरुकुलों के बारे में अनर्गल प्रचार बिल्कुल गलत है।

प्रसिद्ध प्रवचनकार सुश्री कनकेश्वरी देवी

इच्छाएँ पूरी नहीं होती हैं तो बदनाम करने का मौका ढूँढ़ते हैं।

आचार्य श्री रामगोपाल शुक्ल उपाध्यक्ष, श्रद्धा चैनल

अगर किसी संत पर कोई उँगली उठती है तो समझ लेना यह उँगली हमारी संस्कृति पर, हमारे ऊपर उठ रही है।

डॉ. सुमनजी (भूतपूर्व पादरी रॉबर्ट सॉलोमन)
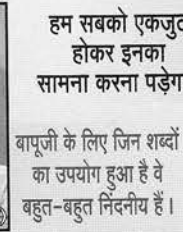
बापूजी के लिए जिन शब्दों का उपयोग हुआ है वे बहुत–बहुत निंदनीय हैं।

हम सबको एकजुट होकर इनका सामना करना पड़ेगा।

महंत श्री धीरजजी महाराज, बाबा बालकनाथजी सिद्ध पीठ

डॉ. रामप्रपन्नाचार्यजी महाराज

विदेशी षड्यंत्र का हम सबको मुकाबला करना है।

महामंडलेश्वर स्वामी श्री देवेन्द्रानंद गिरिजी महाराज

संपूर्ण भारत के संत आपके साथ हैं।
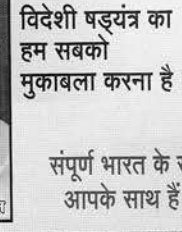
संत–महापुरुषों को बदनाम करने के लिए चलाये जा रहे कुप्रचार के षड्यंत्रों के खिलाफ हिन्दू समाज संगठित हो रहा है। मान्यवर संतों की उपस्थिति में इंदौर में संपन्न हुई विशाल धर्मसभा तथा जन–जागृति यात्रा की एक झलक।

बिहार के बाढ़-पीड़ितों के लिए फूड पैकेट्स तैयार करते हुए सेवाधारी।

1 September 2008
RNP. NO. GAMC 1132/2006-08
WPP LIC NO. GUJ-207/2006-08
RNI NO. 48873/91
DL(C)-01/1130/2006-08
WPP LIC NO.U(C)-232/2006-08
G2/MH/MR-NW-57/2006-08
WPP LIC NO. MH/MR/14/07-08
'D' NO. MR/TECH/47-4/2008

रामनगर, जि. आणंद (गुज.) में बटुक भोजन

देश-विदेश में फैली पूज्य बापूजी की कीर्ति-सुवास को दर्शाते हुए यू.एस.ए. के भक्तों द्वारा निकाली गयी संकीर्तन यात्रा।

भाटीया, जि. जामनगर (गुज.) में 'दिव्य प्रेरणा प्रकाश' (युवाधन सुरक्षा) का निःशुल्क वितरण।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर सूरत (गुज.) में उपस्थित भक्त-समुदाय मक्खन-मिश्री के साथ-साथ ज्ञान और प्रेम के माधुर्य में सराबोर हुआ।

निंदा, कुप्रचार और अफवाहों के उठे बवंडर भी बापू के दुलारों को नहीं रोक पाये और श्रावणी पूनम तथा रक्षाबंधन के पवित्र अवसर पर नोयडा (उ.प्र.) में उमड़ पड़ा अतिविशाल जनसागर।

Posting at PSO Ahmedabad between 25th of preceding month to 10th of current month. * Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.